प्रकाशन तिथि : 01 जून, 2021
प्रेषण तिथि : 04 जून, 2021

'डाक पंजियन सं. जयपुर सिटी/247/2021-23
स.प.सं. 66332/97

पथ-प्रेरक

पाक्षिक

वर्ष 25 | अंक 06 | कुल पृष्ठः 8 | एक प्रतिः रुपए 7.00 | वार्षिक : रुपए 150/-

सरकार व संगठन को लिखा पत्र, जताया ऐतराज

हरनावा में शराब माफिया के संघर्ष में एक गरीब और निर्दोष राजपूत की हत्या के प्रकरण को दुर्घटना का स्वरूप देकर अपराधियों को बचाने के प्रयास के विरोध में श्री प्रताप फाउंडेशन ने राजस्थान सरकार के मुखिया को पत्र लिखकर ऐतराज जताया एवं इस प्रकरण की राजनीतिक हस्तक्षेप से मुक्त रखते हुए योग्य अधिकारी से निष्पक्ष जांच की मांग की। पत्र की प्रति सत्ता पक्ष के नेताओं को भी भेजी गई एवं उनसे आग्रह किया गया कि वे मुख्यमंत्री जी को पूरे प्रकरण से अवगत करवायें। साथ ही निवेदन किया गया कि मुख्यमंत्री जी को यह भी बताएं कि किस प्रकार नागौर जिले के राजनेता जातिवाद के चलते अपराधियों के संरक्षक बन रहे हैं। पत्र की प्रति के साथ समाज के लोगों ने मुख्यमंत्री कार्यालय को सैंकड़ों मेल किए।

(शेष पृष्ठ 6 पर)

क्षात्र धर्म का ही एक रूप था बुद्ध का जीवन

बुद्ध एक क्षत्रिय कुमार थे और उन्होंने जो जीवन जिया वह भी क्षात्रधर्म का ही एक रूप है। अपने भीतर और समाज में फैली तामसिक वृत्ति के साथ संघर्ष करना और उसे पराजित करके मानव जीवन के परम लक्ष्य को प्राप्त करना क्षात्रधर्म का पालन करना ही है। बुद्ध ने अपने समय में समाज में फैली हिंसा, पाखंड आदि बुराइयों के विरुद्ध अपने तरीके से संघर्ष किया, समाज के अज्ञान को दूर करने के लिए साधना द्वारा ज्ञान को अपने में अवतरित किया और फिर इस ज्ञान से सम्पूर्ण समाज को आलोकित करने का कार्य जीवनपर्यंत करते रहे। इस संघर्ष के दौरान उन्होंने व उनके साथियों ने अनेक प्रकार के कष्टों को सहन किया। उनके प्राण तक लेने के प्रयास तक हुए किन्तु वे अपने पथ से विचलित हुए बिना अपना कर्म

करते रहे। यह सब एक क्षत्रिय ही कर सकता है। उपरोक्त बातें माननीय महावीर सिंह जी सरवड़ी ने बुद्ध पूर्णिमा के अवसर पर आयोजित वर्चुअल कार्यक्रम में अपने उद्बोधन के दौरान कही। उन्होंने बताया कि वैशाख मास की पूर्णिमा के दिन भगवान बुद्ध को बोधिसत्व की प्राप्ति हुई थी इसीलिए इसे बुद्ध पूर्णिमा के नाम से जाना जाता है। महात्मा बुद्ध, जिनका प्रारंभिक नाम सिद्धार्थ था, कपिलवस्तु के शाक्य वंशीय राजा शुद्धोधन के पुत्र थे। उनकी माता महामाया कोलिय वंश की थी। बुद्ध के अनोखे और दिव्य जीवन के संकेत उनके जन्म से पूर्व ही उनके परिवार और माता पिता को मिलने लग गए थे। अनेकों कथाओं में यह सभी बातें विस्तार से बताई गई हैं कि किस प्रकार उनका जन्म हुआ, किस प्रकार उनका पालन पोषण हुआ और किस प्रकार वे सांसारिक सुखों को त्यागकर धर्म के पथ पर चल पड़े। जन्म के 8 दिनों के भीतर उनकी माता का देहांत, संत असित काल देवल की भविष्यवाणी, पिता शुद्धोधन द्वारा बुद्ध को संसार से विरक्त होने से रोकने के प्रयास, घायल हंस को देखकर उनके हृदय में करुणा का उदय, संगीत-साहित्य-धर्म आदि में उनकी रुचि, कर्मकांडीय आडंबर आदि के प्रति उनका रोष, यशोधरा से उनका विवाह, मानव मन के स्वभाव पर उनका चिंतन-मनन, रोग-वृद्धावस्था-मृत्यु आदि को गहराई से देखने जैसी अनेकों घटनाओं ने सिद्धार्थ को महात्मा बुद्ध बनने के मार्ग पर अग्रसर किया। गृहत्याग के पश्चात विभिन्न संतों के साथ वे रहे और साधनागत जीवन जीते हुए परम सत्य की खोज करने लगे। ध्यान-समाधि में संलग्न रहे। शरीर पीड़न तप जैसी अनेकों पद्धतियों से उन्होंने साधना की। अंत में इन सभी पद्धतियों की निरर्थकता को समझकर उन्होंने इनको छोड़ दिया। अब वे मध्यम मार्ग से रहने का अभ्यास करने लगे और उन्हें सम्बोधि की प्राप्ति हुई। प्राप्ति के पश्चात उन्होंने अपने पास आने वालों को कथाओं आदि के माध्यम से अपने ज्ञान को बांटना प्रारम्भ किया। उन्हें अपने शाश्वत और सनातन स्वरूप से बुद्ध ने परिचित करवाया। एक नवीन उपासना पद्धति के रूप में बौद्ध धर्म का जन्म हुआ। (शेष पृष्ठ 6 पर)

'आत्मावलोकन व श्रेष्ठ के चयन का मार्ग है संघ'

(वर्चुअल माध्यम से मनाया वीरमदेव बलिदान दिवस)

हम विचार करें कि वीरमदेव जी के जीवन में ऐसी क्या विशेषता थी कि आज हम उनका बलिदान दिवस मना रहे हैं? विचार करें कि वीरमदेव जी के पास शहजादी से विवाह का जैसा प्रस्ताव आया वैसे प्रलोभन जब हमारे जीवन में आते हैं तब क्या हम वीरमदेव बन पाते हैं? यह अंतरावलोकन, अपने आपको देखने की बात जिसके जीवन में आ जाती हैं वह निश्चित रूप से वीरमदेव बनने के मार्ग पर आरूढ़ हो जाता है। अपने आप को देखना और फिर श्रेष्ठ का चयन करना, जो ऐसा कर लेता है वह हम सबके लिए आदरणीय बन जाता है, हमारी संस्कृति का वाहक बन जाता है। 18 मई को जालोर संभाग द्वारा वीरमदेव जी चौहान के बलिदान दिवस पर आयोजित

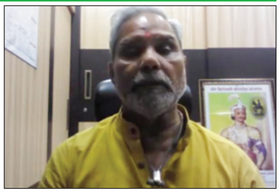

वर्चुअल कार्यक्रम में संघ की बात कहते हुए संघ के प्रतिनिधि ने उपरोक्त बात कही। उन्होंने कहा कि हम इतिहास किस लिए पढ़ते हैं? पूज्य तन सिंह जी और श्रद्धेय आयुवान सिंह जी ने जिस कारण से इतिहास के अध्ययन की बात कही है, जिस दृष्टिकोण से संघ इतिहास का अध्ययन करता है, वह यह है कि इतिहास से बड़ा कोई शिक्षक नहीं होता। जब तक इतिहास को हम शिक्षक नहीं मानेंगे तब तक वह हमारे लिए मात्र कुछ घटनाओं का संग्रह रहेगा जिनमें जीत की घटनाएं भी होंगी और हार की घटनाएं भी होंगी। श्रेष्ठ लोगों के आगे बढ़ने की बात भी होगी तो नेष्ठ लोगों के आगे आने के दृष्टांत भी होंगे। हम उसमें से क्या ग्रहण कर पाते हैं यह तभी तय होता है जब हम इतिहास को एक विद्यार्थी के दृष्टिकोण से, सीख लेने के दृष्टिकोण से, उससे प्रेरणा लेने के दृष्टिकोण से पढ़ते हैं। जब हम इस प्रेरणा की बात करते हैं तो जालौर के इतिहास से एक और पात्र हमारे सामने आता है। वह है हीरा दे। व्यक्तिगत धर्म या व्यक्तिगत मर्यादाएं हमारी सनातन संस्कृति में बहुत उच्च स्तर की बताई गई हैं। लेकिन हम हीरादे का उदाहरण देखते हैं तो पाते हैं कि जिस संस्कृति में पति को परमेश्वर बताया गया हो, उस संस्कृति में भी कोई महिला अपने पति की हत्या कर देती है और उसके बावजूद भी वह हमारे लिए वरेण्य हो जाती है, आदरणीय व सम्माननीय हो जाती है। इसका क्या कारण है? कारण है श्रेष्ठ का चयन। धर्म की, राष्ट्र की, संस्कृति की आवश्यकता के सामने अपनी व्यक्तिगत मर्यादा का उन्होंने त्याग किया इसलिए वह हमारे लिए प्रेरणादायक बन गईं। इसी युद्ध का एक तीसरा पात्र है बीका दहिया। वीरमदेव जी की किसी बात से उसका व्यक्तिगत अहंकार आहत हुआ और उस अहंकार के साथ जब स्वार्थ मिल गया तो उसने किस प्रकार विनाश पैदा किया वह भी हमने देखा।

(शेष पृष्ठ 6 पर)

संघ साहित्य के ऐतिहासिक संदर्भ

पूज्य श्री तनसिंह जी द्वारा 'बदलते दृश्य' नामक पुस्तक के सत्रहवें प्रकरण 'बदलते दृश्य' में उल्लेखित मेवाड़ के कुंवर पृथ्वीराज के संदर्भ में...

कुंवर पृथ्वीराज मेवाड़ के महाराणा रायमल के पुत्र और महाराणा सांगा के बड़े भाई थे, वे बाल्यकाल से ही बड़े साहसी और बलशाली थे। महाराणा रायमल ने राज्यारोहण के कुछ वर्षों बाद ही महाराणा रायमल के भाई उदा के पुत्र सहसमल व सूरजमल मालवा के सुल्तान गयासुद्दीन खिलजी को मेवाड़ पर आक्रमण के लिए ले आए। मेवाड़ के वीरों ने गढ़ से निकलकर गयासुद्दीन के सेना पर तीव्र आक्रमण किया, इस समय कुंवर पृथ्वीराज किशोरावस्था में थे। उन्होंने अद्भुत वीरता दिखलाई और मालवा की सेना को पराजित किया, गयासुद्दीन भाग कर मांडू चला गया। इसके कुछ समय बाद गयासुद्दीन ने अपने एक दूत को सुलह के लिए महाराणा रायमल के पास भेजा, कुंवर पृथ्वीराज ने सुलह के लिए स्पष्ट मना कर दिया। अपनी पराजय का बदला लेने के लिए गयासुद्दीन ने विशाल सेना एकत्र की और मेवाड़ पर आक्रमण किया, मेवाड़ी सेना का नेतृत्व पृथ्वीराज ने किया। दिन भर दोनों सेनाओं में भीषण युद्ध हुआ। पृथ्वीराज ने चुने हुए राजपूत सैनिकों के दस-दस के अनेक दल बनाए और रात्रि को मालवा की सेना के ऊपर तीव्र गति से आक्रमण किया और गयासुद्दीन के शिविर तक पहुंच कर उसके सैनिकों को मारते हुए उसे बन्दी बनाकर चित्तौड़ ले आए। एक माह तक गयासुद्दीन मेवाड़ में बंदी के रूप में रहा और फिर महाराणा से क्षमा याचना कर मुक्त हुआ। महाराणा रायमल ने पृथ्वीराज को कुम्भलगढ़ का प्रशासक नियुक्त किया। पृथ्वीराज ने कुम्भलगढ़ और गोड़वाड़ क्षेत्र में बहुत अच्छी प्रशासनिक व्यवस्था कायम की। इस दौरान मेवाड़ में टोडा के सोलंकियों ने शरण ली हुई थी जिनका राज्य पठानों ने छीन लिया था। सोलंकियों के सरदार राव सुरतान की बहिन (कुछ इतिहासकारों के अनुसार पुत्री) तारादेवी, जो स्वयं वीर थी, अनुपम सौन्दर्य की स्वामिनी थी, के बारे में कुंवर पृथ्वीराज ने सुना तो उससे विवाह का प्रस्ताव भेजा, प्रत्युत्तर में तारा देवी ने कहा कि जो मेरी मातृभूमि को पठानों से मुक्त कराएगा मैं उसी से विवाह करूंगी। पृथ्वीराज ने अपने 500 राजपूत सैनिकों के साथ टोड़ा पर आक्रमण किया। टोड़ा पर अधिकार किए बैठे पठानों ने अपने सरदारों लल्ला खां के नेतृत्व में पृथ्वीराज का मुकाबला करना चाहा। लल्ला खां पृथ्वीराज के हाथों मारा गया और पठान टोड़ा छोड़कर भाग गए। पृथ्वीराज ने टोड़ा वापिस सोलंकियों को सौंप दिया। अजमेर के मुस्लिम सुबेदार को जब ये पता चला तो उसने पृथ्वीराज के विरुद्ध आक्रमण की तैयारी कर अजमेर से प्रस्थान किया, पृथ्वीराज को पता चलने पर वे तुरन्त अपने सैनिकों के साथ अजमेर के लिए रवाना हुए और इतनी तीव्र गति से गए कि सूबेदार अभी अजमेर से थोड़ा आगे आया ही था कि पृथ्वीराज वहां पहुंच गए। पृथ्वीराज के द्रुत आक्रमण से मुस्लिम सेना हतप्रभ रह गई, युद्ध में अजमेर का सूबेदार मारा गया और पृथ्वीराज को विजय प्राप्त हुई। महाराणा रायमल ने भैंसरोड गढ का परगना क्षेमकरण के पुत्र रावत सूरजमल और राणा लाखा के पौत्र रावत सारंगदेव को दे रखा था। भैंसरोडगढ़ के सामरिक महत्व को देखते हुए पृथ्वीराज उसे अपने नियंत्रण में रखना चाहते थे। महाराणा रायमल की सहमति से उन्होंने उस पर अधिकार कर लिया। नाराज सूरजमल और सारंगदेव सहयोग के लिए मांडू गए। उस समय मांडू पर नसीरुद्दीन खिलजी शासन कर रहा था, जो मेवाड़ से मालवा की पराजय का बदला लेना चाहता था। उसने तुरन्त मेवाड़ पर आक्रमण किया। महाराणा रायमल पृथ्वीराज के पास संदेश भेज कर स्वयं सेना सहित मालवा के आक्रमण का सामना करने आगे बढ़े। गंभीरी नदी के किनारे युद्ध प्रारम्भ हुआ। भयंकर युद्ध में महाराणा रायमल घायल हो चुके थे और मालवा की विजय होने ही वाली थी कि पृथ्वीराज एनवक्त पर युद्ध स्थल पर पहुंच गए और अपने अद्भुत रण कौशल से युद्ध का पासा ही पलट दिया। मालवा की सेना और सुल्तान नसीरुद्दीन को युद्ध क्षेत्र से भागना पड़ा और विजय चित्तौड़ की हुई। महाराणा कुम्भा की पुत्री और पृथ्वीराज की बुआ रमाबाई का विवाह गिरनार के शासक मंडलीक से हुआ था, जो उन्हें तकलीफ देता था। पृथ्वीराज को पता चलने पर उन्होंने गिरनार पर चढ़ाई कर दी। मंडलीक द्वारा प्रार्थना करने पर उसके कान का एक कोना काट कर उसे छोड़ दिया और अपनी बुआ को लेकर कुम्भलगढ़ आ गए। रमाबाई में कुम्भलगढ़ ही रही और वहीं उन्होंने विष्णु मंदिर बनवाया। कुंवर पृथ्वीराज की बहन आनन्द बाई का विवाह सिरोही के राव जगमल से हुआ था जो अपनी दूसरी रानियों के बहकावे में आकर उन्हें बहुत दुःख देता था। यहां तक कि पलंग का पाया उसके हाथ में रख कर सोता और कहता कि कहां है तेरा वीर भाई पृथ्वीराज, बुला उसे तेरी रक्षा के लिए। पतिव्रता आनन्द बाई ये सारे दुःख सहती रही परन्तु अपने पीहर पक्ष में किसी को कुछ नहीं कहा। लेकिन ये किसी और माध्यम से पृथ्वीराज को पता चल गया, कुंवर पृथ्वीराज तुरन्त अपने सैनिकों के साथ सिरोही रवाना हो गये। सैनिकों को बाहर छोड़कर पृथ्वीराज अकेले ही महल में घुस गए और तलवार की ठोकर से सोये हुए राव जगमाल को जगाया और उसका वध करना चाहा परन्तु उनकी बहन आनन्द बाई द्वारा सुहाग की रक्षा की गुहार पर जीवन दान दे दिया। राव जगमाल ने कहा मैं अब कभी आपकी बहन को दुःख नहीं दूंगा। तब पृथ्वीराज का क्रोध कम हुआ। उसके बाद राव जगमाल ने पृथ्वीराज और उनके सैनिकों के लिए दावत का आयोजन किया, दावत के बाद जब पृथ्वीराज वापिस कुम्भलगढ़ रवाना हुए तब राव जगमाल ने पृथ्वीराज को धोखे से गोलियों के माध्यम से विष दे दिया। विष के प्रभाव से कुम्भलगढ़ के नजदीक पहुंचते ही कुंवर पृथ्वीराज की मृत्यु हो गई। तारा देवी उनके साथ सती हुई। कुंवर पृथ्वीराज अत्यन्त बलशाली, वीर, अद्भुत रण कौशल के धनी थे। सैन्य नीति बनाने और उसे क्रियान्वित करने में अत्यन्त निपुण थे। उन्होंने पूरे राज्य में स्थान-स्थान पर सैन्य शिविर स्थापित किए हुए थे जहां अच्छी नस्ल के अश्व और श्रेष्ठ सैनिक हर क्षण तैयार रहते थे। अपने सैन्य अभियानों में वो द्रुतगति से आक्रमण करते और उस आक्रमण में वे सैन्य शिविर अत्यन्त उपयोगी सिद्ध होते जहां वो थके हुए अश्व को छोड़कर नए अश्व पर सवार हो युद्ध स्थल की ओर बढ़ जाते। उनके आक्रमण अत्यन्त तीव्र होते और वे एक युद्ध स्थल से दूसरे युद्ध स्थल तक इतनी शीघ्रता से पहुंचते कि इतिहास में 'उड़ना राजकुमार के नाम से प्रसिद्ध' हो गए।

सन्दर्भ ग्रन्थ : (1) वीर विनोद : कविराज श्यामल दास।

- खींवसिंह सुल्ताना

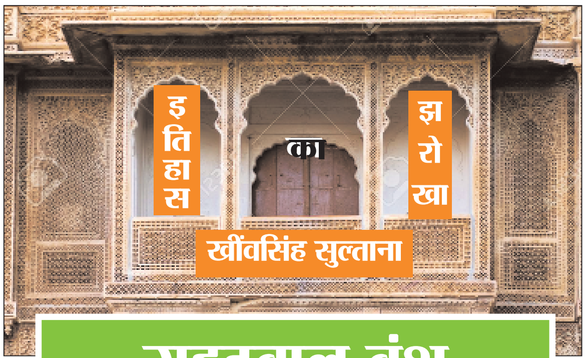

गहड़वाल वंश

प्रतिहार वंश के पतन के पश्चात बनारस तथा कन्नौज में जिस राजनीतिक शक्ति का उदय हुआ वो थी गहड़वाल वंश का उदय। गहड़वाल वंश के बारे में जानकारी के मुख्य स्रोत अभिलेख और साहित्यिक कृतियां है। गहड़वाल वंश से संबंधित प्रमुख लेख चन्द्रदेव का चन्द्रावली अभिलेख, मदनपाल के राहन तथा बसही अभिलेख, गोविन्दचन्द्र के वाराणसी तथा कमौली के ताम्रपत्राभिलेख, गोविन्द्र चन्द्र का लार (देवरिया) से प्राप्त अभिलेख, कुमारदेवी का सारनाथ अभिलेख प्रमुख है। समकालीन साहित्यिक कृतियों से भी गहड़वाल वंश के बारे में जानकारी प्राप्त होती है। इन साहित्यिक ग्रन्थों में चन्द्रबरदाई का पृथ्वीराज रासो, लक्ष्मीधर का कृत्य कल्पतरू, मेरुतंग की प्रबंध चिंतामणि आदि प्रमुख है। मुस्लिम लेखकों के विवरण से भी गहड़वाल वंश के बारे में जानकारी मिलती है। प्रारम्भिक गहड़वाल शासक कलचुरियों के सामन्त शासक के रूप में शासन कर रहे थे, इस वंश की स्वतंत्रता का जन्मदाता चन्द्रदेव था जिसने प्रतिहार साम्राज्य के विघटन से फैली अव्यवस्था के मध्य 1090 ईस्वी के लगभग कन्नौज पर अधिकार किया उसने जिस कन्नौज के शासक को परास्त किया उसका नाम गोपाल था। कन्नौज से चन्द्रदेव के चार अभिलेख मिलते है जो दान पत्र के रूप में है। इन अभिलेखों से पता चलता है कि चन्द्रदेव ने अपनी शक्ति का विस्तार कर वाराणसी, अयोध्या तथा इन्द्रप्रस्थ पर भी अधिकार कर लिया। इस विजय यात्रा के कारण अनेक शक्तिशाली शासक उसके शत्रु बन गए और उसे उनसे युद्ध करने पड़े। उसने कलचुरी नरेश यश कर्ण को भी पराजित किया। कन्नौज पर अधिकार हो जाने के बाद चन्द्रदेव का पांचाल प्रदेश पर भी अधिकार हो गया। इन्द्रप्रस्थ के तोमरवंशी शासकों ने भी उसकी अधीनता स्वीकार कर ली। उसने बंगाल के सेनवंश के अभियान का भी सफल प्रतिरोध किया। चन्द्रदेव ने 1103 ईस्वी तक शासन किया। एक सामन्त शासक की स्थिति से उसने एक स्वतंत्रत राज्य का निर्माण किया और उसे विशाल साम्राज्य में बदल दिया। चन्द्रदेव के बाद उसका पुत्र मदनपाल गहड़वाल वंश का शासक बना, लेकिन वह एक अयोग्य शासक सिद्ध हुआ। मदनपाल के समय शासन की वास्तविक सत्ता एक संरक्षक समिति के हाथ में थी और वह नाम मात्र का शासक था। मदनपाल के समय कन्नौज पर तुर्कों का आक्रमण हुआ उन्होंने मदनपाल को परास्त कर बन्दी बना लिया था, मदनपाल के पुत्र गोविन्दचन्द्र ने कड़े संघर्ष और अपने युद्ध कौशल से अपने पिता को तुर्को से मुक्त करवाया था। **(क्रमशः)**

उदयपुर का 468वां स्थापना मनाया

श्री क्षत्रिय युवक संघ के मेवाड़ संभाग द्वारा उदयपुर शहर का 468 वां स्थापना दिवस अंतरराष्ट्रीय वेबिनार के माध्यम से मनाया गया। कार्यक्रम की शुरूआत प्रार्थना के साथ संभाग प्रमुख बृजराज सिंह खारड़ा द्वारा की गई। डॉ कमल सिंह बेमला ने संचालन करते हुए सभी अतिथियों का परिचय करवाया। प्रोफेसर पुष्पेन्द्र सिंह राणावत ने उदयपुर की भौगोलिक परिस्थितियों की जानकारी देते हुए इस दृष्टिकोण से इसकी स्थापना पर प्रकाश डाला। उत्तर महाराष्ट्र यूनिवर्सिटी जलगांव के इतिहासकार डॉ नरसिंह परदेसी ने इस विषय पर अपने शोध के विभिन्न ऐतिहासिक प्रमाण प्रस्तुत किये। चित्तौड़गढ़ से प्रसिद्ध कवि अब्दुल जब्बार ने उदयपुर और महाराणा प्रताप पर कविता पाठ किया गया। नॉर्वे से जुड़े टोरे गुलब्राण्डसन ने उदयपुर वासियों को स्थापना की बधाई प्रेषित की और इसकी सुंदरता का वर्णन किया। आव्हान किया कि इसकी धरोहर, इतिहास, संस्कृति के साथ अरावली पर्वत श्रृंखला की भी रक्षा की जाए। प्रोफेसर ललित पाण्डे ने मेवाड़ की विभिन्न राजधानियों आहड़, नागदा, चित्तौड़गढ़ व उदयपुर के विभिन्न पहलुओं की जानकारी दी। इतिहासकार डॉ विवेक भटनागर ने अपने मेवाड़ी में उद्बोधन में यहां की कला, इतिहास, स्थापत्य पर गहन ब्यौरा प्रस्तुत किया। पूर्व विदेश सचिव मोहन सिंह जी कोठारी और प्रताप सिंह जी तलावदा ने भी अपने विचार प्रस्तुत किये। इथियोपिया से मुलुनेह फ्रोमसा ने अपने उदयपुर प्रवास के अनुभवों को साझा किया और उदयपुर को विश्व का सर्वश्रेष्ठ शहर बताया। वेबिनार में बताया गया कि उदयपुर शहर अकबर द्वारा मेवाड़ पर आक्रमण से पहले ही बसा लिया गया था, इसलिए यह तथ्य गलत है कि इसकी स्थापना इस आक्रमण से बचने के लिए की गई थी। इस आक्रमण के समय तो केवल राजधानी स्थानांतरित की गई थी। अंत में गीता के श्लोक के साथ कार्यक्रम संपन्न हुआ ।

साप्ताहिक केन्द्रीय शाखा, संघ को समझने का प्रयास

संघ के केन्द्रीय कार्यालय 'संघशक्ति' में माननीय महावीर सिंह जी के सानिध्य में एक साप्ताहिक शाखा लगती है जिसमें स्थानीय स्वयंसेवक शामिल होते हैं। विगत तीन चार सप्ताह से उस शाखा को गुगल मीट पर लाईव किया गया एवं उससे भौतिक रूप से वहाँ उपस्थित स्वयंसेवकों के अतिरिक्त अन्यों को दो गुगल मीट के माध्यम से जोड़ा गया। लगभग 200 स्वयंसेवक इस माध्यम से शाखा से जुड़ जाते हैं और संघ दर्शन को समझने का प्रयास करते हैं। इसी क्रम में विगत 23 मई को लगी शाखा में माननीय महावीर सिंह जी सरवड़ी ने कहा कि पूज्य श्री तनसिंह जी रचित साहित्य अत्यंत गूढ़ है तथा बार बार पढ़ने से ही समझ में आ सकता है। जैसे जैसे हम संघ द्वारा बताए मार्ग पर आगे बढ़ते हैं वैसे वैसे हमारे अनुभवों के आधार पर हमें संघ साहित्य की पुस्तकों का नवीन अर्थ समझ में आता है। इसीलिए हम इन पुस्तकों को बार-बार पढ़ते हैं और उन पर चर्चा करते हैं। उन्होंने पूज्य श्री की डायरी के अवतरण संख्या 370 के पठन पश्चात उस पर चर्चा करते हुए बताया कि इस अवतरण में पूज्य श्री द्वारा उन दृष्टिकोणों की चर्चा की गई है जिनसे प्रेरित होकर वे डायरी लिखा करते थे। उन्होंने डायरी के कुछ अवतरण एक तटस्थ प्रेक्षक के रूप में लिखे हैं तो कुछ सक्रिय शिक्षक के रूप में। कर्मयोगी साधक के रूप में उन्होंने जो अवतरण लिखे है उनका लाभ पाठक को तभी होगा जब वह यह समझकर पढ़ें कि इसे उसने स्वयं ने लिखा है। सहृदय किन्तु चतुर प्रशासक के रूप में जो अवतरण लिखे गए हैं वे केवल अनुपालना के लिए ही नहीं हैं अपितु उनका मर्म समझना भी आवश्यक है। यदि समझ में न आए तो शिक्षक से पूछने में भी कोई संकोच नहीं करना चाहिए। जो अवतरण उन्होंने एक भक्त के रूप में लिखे हैं उनको पढ़ते समय पाठक को उसमें भाव और कृतज्ञता का दर्शन करना चाहिए। इन दृष्टिकोणों को समझाने के बाद माननीय महावीर सिंह जी ने डायरी के अवतरण संख्या 6 व 8 पर चर्चा करते हुए बताया कि यह दोनों अवतरण सखा भाव से संबंधित है। सखा भाव हमारी साधना का एक अनिवार्य अंग है परंतु वह साधना का लक्ष्य नहीं है। संघ के प्रारम्भ में पूज्य तनसिंह जी के कुछ साथियों ने भी तनसिंह जी को केवल सखा ही माना। ऐसे लोग न

उनको समझ सके न उनसे मार्गदर्शन ले सके। हमें भी यह सावधानी रखने की आवश्यकता है कि हम सखा भाव पर ही ठहर न जाएं। शाखा में गूगल मीट के माध्यम से देश भर से जुड़ें स्वयंसेवकों के इस विषय में प्रश्नों का उत्तर देते हुए उन्होंने बताया कि हमें संघ द्वारा प्रदान की जाने वाली दिव्यता को धारण करने के लिए अपने आप में पात्रता का सृजन करना चाहिए। इसके लिए तपस्या ही एकमात्र मार्ग है। प्रारम्भिक अवस्था में हमारे संघ से जुड़ने के लिए सखाभाव आवश्यक है किंतु उसके बाद हमें शिष्य बनकर संघ को गुरु के रूप में स्वीकार करना चाहिए तभी हम विकास का मार्ग पकड़ सकेंगे।

इसी प्रकार 16 मई को रविवारीय शाखा के दौरान पूज्य नारायणसिंह जी रेडा द्वारा लिखित एक लेख की पंक्ति 'इस अतर्क पथ के हम सभी सतर्क राही बन जावें' पर चर्चा की गई। इसकी व्याख्या करते हुए माननीय महावीर सिंह जी ने बताया कि संघ अपने आप में अतर्क है क्योंकि सत्य किसी तर्क से सिद्ध नहीं होता वह तो स्वयंसिद्ध होता है। उसी स्वयंसिद्ध सत्य को पुष्ट करने के लिए तर्कों का निर्माण किया जाता है। हमने भी संघ को सत्य के रूप में स्वीकार किया है और इस मार्ग पर हम बढ़ने का प्रयास कर रहे हैं। ऐसा करते हुए हमें सदैव सतर्क और जागरूक रहना आवश्यक है। जितना हमने संघ को जाना और समझा है उसका हम पूर्ण सतर्कता से अपने जीवन में पालन करें यही इस पंक्ति का अर्थ है। गूगल मीट के माध्यम से जुड़ें स्वयंसेवकों की जिज्ञासाओं का समाधान करते हुए उन्होंने बताया कि श्रद्धा हृदयगत होती है और तर्क बुद्धि का क्षेत्र है। जो विषय बुद्धि की ग्राह्य क्षमता से परे होते हैं वहां तर्क काम नहीं देता। संघमार्ग पर बढ़ते हुए ऐसे अनेक अनुभव होते हैं तो तर्क से परे होते हैं। उनको समझने की क्षमता श्रद्धा से आती है। यह भी याद रखना चाहिए कि अंधश्रद्धा जैसी कोई वस्तु वास्तव में नहीं होती बल्कि वह श्रद्धा का अभाव ही है। बुद्धि हमारे लिए उपयोगी साधन है, उसका साधन के रूप में ही प्रयोग करना चाहिए। यदि वह हमारी स्वामिनी बन जाये तो हमें निष्क्रिय ही नहीं विरोधी भी बना सकती है। इसीलिए संघरूपी इस अतर्क पथ पर हमें पूर्ण सतर्कता और जागरूकता के साथ निरंतर बढ़ते रहना है। इसी क्रम में प्रति गुरुवार को संघ के युट्यूब चैनल के माध्यम से झनकार के सहगीतों के अर्थबोध पर होने वाला प्रसारण भी जारी रहा। 29 अप्रैल को 'इतिहास की चोटों पर' सहगायन पर चर्चा करते हुए माननीय अजीत सिंह जी धोलेरा ने कहा कि हमारी कौम के बेजोड़ इतिहास पर हमें गर्व करने के साथ ही ऐतिहासिक अन्तरावलोकन करने की भी आवश्यकता है। पूज्य तनसिंह जी ने इस गीत में राजपूत इतिहास के जो महत्त्वपूर्ण मोड़ रहे हैं उनके बारे में बताया है। पृथ्वीराज चौहान की पराजय के कारण, बाबर और राणा सांगा के युद्ध में सरहद्दी का विश्वासघात, महाराणा प्रताप के संघर्ष में झाला मानसिंह और मानसिंह आमेर की भूमिका, मेवाड़ के महाराणा राजसिंह जी के दिल्ली दरबार में न जाने की घटना ऐसे ही महत्त्वपूर्ण ऐतिहासिक घटनाक्रम है। इनसे हमें आपस में न लड़कर संगठित रहने की शिक्षा ग्रहण करनी चाहिए। 6 मई को पूज्य श्री रचित 'नये आने वालों' सहगीत के अर्थबोध में उन्होंने कहा कि संघ अपने आप में एक अनोखी साधना प्रणाली है। यह प्रणाली किस प्रकार के त्याग, परिश्रम, समर्पण और सहनशक्ति की मांग करती है यह इस गीत में बताया गया है। साधना सदैव उर्ध्वगामी होती है जिसमें कष्टों को सहन करना पड़ता है, सुखों का त्याग करना पड़ता है। संघ एक स्वप्न है जिसे साकार करने के लिए भागीरथ प्रयत्न की आवश्यकता है। जीवन भर इस कार्य को करना पड़ेगा। इसलिए संघ में आने से पहले संघ के उद्देश्य, मार्ग, विचारधारा को ठीक से समझ लेना चाहिए तभी हमारे जीवन में संघ-शिक्षण को हम उतार सकेंगे। इसी प्रकार 13 मई को 'फूलों की आंखों में' सहगीत का अर्थ स्पष्ट करते हुए उन्होंने कहा कि यह गीत एक कर्मनिष्ठ और समर्पित साधक का अपने प्रेरक और मार्गदर्शक के प्रति विनम्र निवेदन है। तत्पर साधक को यहाँ फूल की उपमा दी गई है। ऐसे पुष्प का सौरभ जीवन का प्रतीक है किंतु जब तक यह जीवन परमेश्वर के चरणों में अर्पित होने वाला नैवेद्य बनने को तैयार न हो तब तक वह व्यर्थ रहेगा। संघ हमारे जीवन को सद्गुणों से भर कर ईश्वर के चरणों में चढ़ाने योग्य बनाता है, जीवन की व्यर्थता को अर्थ प्रदान करता है। तनसिंह जी ने संघ के रूप में जो ज्योति जलाई है वह हमारे जैसे असंख्य लोगों को प्रकाशित कर रही है, इस ज्योति को जलाये रखना हमारा कर्त्तव्य है। 20 मई को 'राह मिल गई' सहगीत के अर्थ पर चर्चा में उन्होंने कहा कि हम संघ के स्वयंसेवक के रूप में कृतज्ञता का अनुभव करते हैं कि संघ ने हमें हमारा ध्येय ही नहीं बताया बल्कि वहां तक पहुंचने का सरलतम मार्ग बताकर उस पर प्रवृत्त भी कर दिया। हमारी इसी कृतज्ञता को तनसिंह जी ने इस गीत में स्वर दिया है। हमें यह मार्ग तो मिला ही है इस पर साथ चलने वाले जीवन भर के साथी भी मिल गए, यह कितनी प्रसन्नता की बात है। इसके पश्चात किसी अन्य सुख की चाह बाकी नहीं रह जाती। केवल इस मार्ग पर चलते रहने की ही प्रार्थना साधक के हृदय से निकलती है और अन्य किसी भी प्रकार के आकर्षण से वह पथ से विचलित नहीं होता।

बालकों से वर्चुअल संवाद

श्री क्षत्रिय युवक संघ में 10-12 वर्ष तक के बालक बालिकाओं के लिए बाल शिविरों का आयोजन होता है। महामारी के कारण जिस प्रकार अन्य गतिविधियां भौतिक रूप से संपन्न होना संभव नहीं है उसी प्रकार ये शिविर भी संभव नहीं हो पाये हैं। ऐसे में बालकों से संवाद स्थापित करने और उनमें संघ का स्मरण जागृत रखने के लिए विगत दो तीन रविवार से वर्चुअल बाल शाखा का आयोजन किया जा रहा है और उसमें दूर दूर बैठे बाल गोपाल जुड़ रहे हैं। यह शाखा मेवाड़ मालवा संभाग के संभाग प्रमुख बृजराजसिंह खारड़ा द्वारा लगाई जा रही है। गुगल मीट के माध्यम से लगाई जा रही इस शाखा में एक एक आई डी से 3-4 बच्चे जुड़ते हैं और इस प्रकार एक बार में 125 से 150 बालकों से संपर्क हो रहा हैं। बच्चों की रूचि एवं सक्रियता प्रेरणादायी है।

बीकानेर का स्थापना दिवस मनाया

संघ के बीकानेर संभाग द्वारा बीकानेर का स्थापना दिवस 13 मई को प्रातः 11 बजे वर्चुअल माध्यम से मनाया गया। इस कार्यक्रम में संघ परंपरा अनुसार प्रार्थना आदि के बाद बीकानेर शहर प्रांतप्रमुख खींव सिंह सुल्ताना द्वारा बीकानेर की स्थापना की परिस्थितियों एवं बीकाजी के पुरुषार्थ की जानकारी दी गई। बीकाजी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व की विस्तार से जानकारी दी गई। चुरु प्रांतप्रमुख राजेंद्र सिंह आलसर द्वारा बीकानेर की स्थापना से अब तक के क्षेत्र के विकास में यहाँ के राजाओं के योगदान के बारे में विस्तार से बताया। महाराजा गंगासिंह द्वारा आधुनिक बीकानेर के निर्माण में योगदान की जानकारी दी गई। यह भी जानकारी दी गई कि वर्तमान में भी बीकानेर के अधिकांश सरकारी कार्यालय, शिक्षण संस्थान आदि रियासत कालीन भवनों में संचालित हो रहे हैं। आधुनिक शासकों द्वारा किए गये नकारात्मक प्रचार के प्रभाव से हमें किसी प्रकार की आत्मलघुता से ग्रसित नहीं होना चाहिए बल्कि इतिहास से सकारात्मक शिक्षण लेकर श्रेष्ठ कर्मों की प्रेरणा लेनी चाहिए। श्री क्षात्र पुरूषार्थ फाउंडेशन द्वारा लगायी जाने वाली रात्रिकालीन वर्चुअल शाखा में भी इसी दिन बीकानेर स्थापना दिवस मनाया गया। खींव सिंह सुल्ताना व लोकेश्वर सिंह महरोली ने बीकानेर की स्थापना के संकल्प, बीकाजी की विजय यात्राओं आदि की विस्तार से जानकारी दी। बीकानेर जोधपुर संबंधों, बीकानेर दिल्ली संबंधों की भी जानकारी दी गई। महाराजा गंगासिंह द्वारा स्थापित गंगा रिसाला के बारे में उम्मेद सिंह तालनपुर द्वारा जानकारी दी गई। शाखा में उपस्थित अन्य सहयोगियों ने भी चर्चा में भाग लिया एवं अपनी जानकारी के अनुसार बीकानेर की विशेषताओं के बारे में बताया।

संपादकीय

आत्मा विहीन व्यवस्था

व्यवस्था की आत्मा क्या होती है? इस प्रश्न का उत्तर ढूंढने से पहले हमें यह समझना पड़ेगा कि यहाँ व्यवस्था शब्द किस अर्थ में प्रयुक्त किया जा रहा है। व्यवस्था का शाब्दिक अर्थ प्रबंध होता है और यहाँ इस आलेख में इसका अर्थ शासन प्रबंध के रूप में लिया गया है। वह प्रबंध जिसके तहत प्रत्येक व्यक्ति अपने सामाजिक एवं शासकीय दायित्वों का भली प्रकार निर्वहन करते हुए श्रेय की प्राप्ति करता है, व्यवस्था कहलाती है। व्यवस्था के तहत कुछ नियम एवं कायदे होते हैं जिनका उसे मानने वाला व्यक्ति पालन करते हैं और एक दूसरे का श्रेय साधन करते हैं। इसके लिए दंड विधान का भी प्रावधान होता है क्योंकि सृष्टि का मूल स्वभाव त्रिगुणात्मक है और मानव स्वभावतः ढलान की ओर या तमोगुण की ओर आकृष्ट होता है। ऐसे तमोगुणाक्रांत व्यक्ति को व्यवस्था में रहने वाले अन्य लोगों के श्रेय साधन में बाधा बनने से रोकने के लिए दंडविधान का भी प्रावधान किया जाता है। लेकिन यहां विचारणीय विषय यह है कि क्या मात्र दंड विधान ही व्यवस्था का प्राण होता है? ऐसा नहीं होता, एक श्रेष्ठ व्यवस्था में दंड विधान तो अंतिम विकल्प के रूप में प्रयुक्त होता है। यह तो एक नकारात्मक साधन है जो प्रेरक नहीं है बल्कि बाधक है। यह किसी व्यक्ति को श्रेष्ठ कर्म करने की प्रेरणा नहीं देता बल्कि नेष्ठ कर्म न करने के लिए भय पैदा करता है। इसलिए दंड विधान को किसी व्यवस्था का प्राण या आत्मा नहीं कहा जा सकता। ऐसे में हमारे सामने स्वाभाविक प्रश्न खड़ा होता है कि आखिर व्यवस्था का प्राण क्या है, उसकी आत्मा क्या है? जब हम दंड विधान को बाधक उपाय मान चुके हैं और यह भी मान चुके हैं कि बाधक उपाय नकारात्मक होते हैं इसलिए व्यवस्था की आत्मा नहीं हो सकते तो फिर हमें साधक उपाय क्या है, यह खोजना चाहिए। साधक उपाय वह है जो श्रेष्ठ कर्म करने को प्रेरित करता है। हम हमारे आस पास के वातावरण में देखें, हमारी संस्कृति को देखें, हमारे इतिहास को देखें, संपूर्ण मानव जाति के इतिहास को देखें तो पायेंगे कि श्रेष्ठ कर्मों का संपादन किस प्रेरणा से संपन्न हुआ। जिस नैतिकता के बल पर लोग गलत काम करने से अपने आपको रोकते है, स्वयं में अवस्थित पशुता को नियंत्रित करते हैं उस नैतिकता का स्रोत क्या है? उस नैतिकता का स्रोत है धर्म। प्रकृति से परे की शक्ति में विश्वास और उस विश्वास को दृढ से दृढतर कर उस सत्ता को स्वयं में अवतरित करने के लिए स्वयं को तैयार करने का मार्ग धर्म है। यही धर्म नैतिकता का जीवन स्रोत है। इसी से नैतिकता जीवन धारण कर जीवंत प्रवाह बनती है और यही धर्म व्यवस्था की आत्मा होता है। जब यह आत्मा व्यवस्था में समाहित रहती है तो व्यवस्था स्वतः प्रेरित हो श्रेष्ठता की ओर अग्रसर होती है अन्यथा तो केवल दंड विधान के बल पर ही व्यवस्था संचालित होती है और वह व्यवस्था निष्प्राण हो मात्र यंत्र रह जाती है।

भारत में व्यवस्था सदैव प्राणवान बनी रही क्योंकि व्यवस्था के नियामकों ने स्वयं पर सदैव धर्म के नियंत्रण को स्वीकार किया। क्षात्र शक्ति संपूर्ण व्यवस्था को नियंत्रित करती थी और स्वयं को धर्म द्वारा नियंत्रित करती थी। ऐसे में स्वच्छंदता कभी अपना स्थान नहीं बना पाती थी। ना ही तो शासक स्वच्छंद होते थे और ना ही जनता स्वच्छंद होती थी। धर्म की प्रेरणा से उत्पन्न नैतिकता व्यवस्था पर आत्मस्वीकृत नियंत्रण स्थापित करती थी और दंड विधान की भूमिका केवल खाने में नमक की मात्रा जितनी ही होती थी। ना इतने न्यायालय होते थे और ना ही इतनी जेलें। ना ही इतना लंबा चौड़ा प्रशासनिक अमला होता था लेकिन उसके बावजूद व्यवस्था सफलता पूर्वक संचालित होती थी और सभी को अपना अपना मूलभूत विकास करने के पर्याप्त अवसर मिलता था। लेकिन समकालीन भारत में व्यवस्था में से उसकी आत्मा का निष्कासन होने लगा। धर्म और व्यवस्था को पृथक पृथक सत्ता के रूप में परिभाषित कर धर्म की परिभाषा और सीमा दोनों को प्रयास पूर्वक सीमित करने का शासकीय प्रयत्न किया गया। पहले इस देश के शासक स्वयं को धर्म द्वारा नियंत्रित रखते थे और स्वप्रेरित होकर इस नियंत्रण को स्वीकार करते थे लेकिन हमारे नये नवेले भाग्यविधाताओं को तो किसी प्रकार का नियंत्रण स्वीकार नहीं था, उनको तो स्वयंभू होना था और स्वयं द्वारा प्रतिपादित सुविधाजनक नैतिकता को स्थापित करना था जिसमें वे आगे भी अपनी सुविधा के अनुसार परिवर्तन कर सकें इसलिए उन्होंनें पहला ही वार धर्म पर किया और धर्म को व्यवस्था से बाहर कर दिया। वे चाहते थे कि उनकी अस्थियां पवित्र संगम में प्रवाहित की जायें लेकिन इसका कारण उनकी नजर में इसकी पवित्रता नहीं था बल्कि वे इस स्थान से अपना रागात्मक संबंध स्थापित कर इस स्थान पर अपना अहसान जता रहे थे। ऐसे भाग्यविधाताओं को धर्म और धर्म के प्रतीकों से इतनी चिढ थी कि शासन प्रशासन में इनका नाम तक इनके लिए अस्वीकार्य था। इसका परिणाम हुआ कि भारत की व्यवस्था से व्यवस्था की आत्मा तिरोहित हो गई, निष्कासित हो गई और पीछे बचा एक निर्जीव ढांचा जो कागज पर लिखे चंद कानूनों से संचालित होता है। उन कानूनों को लागू करने के लिए एक भारी भरकम ढांचा तैयार किया गया, उन कानूनों के निर्माण और समीक्षा के लिए भी एक भारी भरकम ढांचा खड़ा किया गया और उन कानूनों के उल्लंघन पर सजा देने के लिए भी एक भारी भरकम ढांचा तैयार किया गया। ये सब भारी भरकम ढांचे एक प्राण विहीन व्यवस्था थी इसलिए इनके भारी भरकम होने के बावजूद कानूनों के पालन की नैतिक प्रेरणा समाप्त हो गई। व्यक्ति के अंतर में बैठी क्षुद्र आकांक्षाओं को उद्दीप्त होने का अवसर मिला और परिणाम हमारे सामने है। लाशों को जलाने में भी मुनाफाखोरी हो रही है। कफन तक चोरी हो रहे हैं। इससे ऊपर की चोरियों की तो बात ही छोड़ें। आज कोई भी शासक धर्म का नियंत्रण स्वीकार नहीं करना चाहते। वे भी नहीं जो धर्म के नाम से भी चिढ़ते हैं और वे भी जो धर्म के नाम की माला जप जप कर शासक बने हैं।

(शेष पृष्ठ 7 पर)

खरी-खरी

अपना अंतरावलोकन करें समाज के राजनेता

नागौर जिले के हरनावा गांव में शराब माफिया द्वारा किए गये हमले में एक निर्दोष व गरीब राजपूत मारा गया। दो लोग गंभीर घायल हुए। इससे पहले एक घर में घुसकर हमला किया गया और एक का सिर फोड़ दिया गया। अपराधियों के समर्थन में उनके सजातीय कांग्रेसी विधायक के प्रभाव में पुलिस हत्या का मुकदमा दर्ज करने में भी आनाकानी करती है। आंदोलन की चेतावनी के बाद मुकदमा दर्ज होता है और नामजद आरोपियों को गिरफ्तार किया जाता है लेकिन अपराधियों का सजातीय भाजपा विधायक आर एल पी के कार्यकताओं की भीड़ का नेतृत्व करता है और तथाकथित भाजयुमो के कार्यकर्ता को थाने से छुड़वा कर ले जाता है। इसमें देखें कौनसी पार्टी है? कांग्रेस का राजनेता अपराधियों के पक्ष में अपने सत्ताबल का उपयोग करता है, भाजपा का विधायक अपराधी को छुड़वाता है और आर एल पी के कार्यकर्ता भाजपा के विधायक के नेतृत्व में धरना देकर भाजयुमो के कार्यकर्ता को छुड़वाते हैं और उधर आर एल पी का सांसद अपराधियों को निर्दोष बताते हुए बयान जारी करता है। महामारी के कारण प्रदेश में लगे लोकडाउन के बावजूद कोई विधायक भीड़ एकत्र कर प्रदर्शन करता है लेकिन उस पर मुकदमा दर्ज होना तो दूर, वह थाने में बंद अपराधी को भी छुड़वा लेता है और प्रशासन उसका अनुयायी सा व्यवहार करता है। इस पूरे विवरण में पार्टी केवल एक है जाति और उसी जातिवाद के लिए सभी पार्टियों की खिचड़ी बनाकर उसी से अपने जातिवाद का पोषण किया जा रहा है। दूसरी तरफ हमारा आकलन करें। अपराध हमारे साथ हुआ, हमारा एक निर्दोष व्यक्ति मारा गया और पुलिस में उस बाबत मुकदमा दर्ज करवाने के लिए भी हमें पापड़ बेलने पड़े। स्पष्ट हत्या को दुर्घटना घोषित करने का पूरा षड्यंत्र किया गया और हम कुछ करने की स्थिति में नहीं हैं। उस जिले में कुछ करने की स्थिति में नहीं हैं जहां पंचायती राज संस्थाओं में लगभग 8 प्रतिशत जनप्रतिनिधि हमारे हैं। जहां एक पार्टी के जिलाध्यक्ष हमारे हैं। जहां एकाधिक पूर्व विधायक हमारे हैं। जहां अनेक युवा राजनीति में अपना भाग्य आजमाने के प्रयत्नरत हैं। एकाधिक ने विधायक का चुनाव लड़ा है फिर भी ऐसा लगता है कि हम राजनीतिक नेतृत्व विहीन हैं। एक तरफ अपराधियों की जाति का राजनीतिक नेतृत्व है जो सभी मर्यादाओं को ताक पर रखकर अपराध का खुला समर्थन करने में भी संकोच नहीं करता और अपने राजनीतिक बल का उपयोग अन्याय के समर्थन में कर रहा है और दूसरी तरफ हमारा राजनीतिक नेतृत्व है जो न्याय की बात करने में भी एक अजीब प्रकार के भय से ग्रसित होकर मुंह छिपा रहा है। इस घटना को लेकर समाज में काम करने वाले अनेक सामाजिक लोगों ने ग्राम स्तर पर राजनीति करने वालों से लेकर प्रदेश तक की राजनीति करने वाले लोगों से संपर्क कर समाज की न्यायपूर्ण मांग के लिए आगे आने का निवेदन किया लेकिन व्यक्तिगत बातचीत में इसकी आवश्यकता समझते हुए भी उनमें से किसी ने सार्वजनिक बयान तक नहीं दिया। लेख लिखे जाने तक ऐसे सभी लोगों से संपर्क जारी है और हो सकता है किसी की रजपूती जाग जाये पर इतनी हिचकिचाहट समझ से परे है। ऐसे में अनेक प्रश्न खड़े होते हैं। पहला प्रश्न तो यही खड़ा होता है कि ऐसे लोगों पर क्रोध किया जाए या दया? जो व्यक्ति जिस बात को उचित समझता है और सार्वजनिक रूप से कहने की हिम्मत नहीं कर पाता वह तो दया का ही पात्र माना जाएगा। क्रोध करने से होना भी क्या है क्योंकि राजनीति में जो हैं वे तो यही हैं। इनमें वे भी हैं जो वर्षों से जमे हैं और वे भी हैं जो नये नवेले प्रयास कर रहे हैं ऐसे में विकल्प भी क्या है और जब विकल्प नहीं है तो क्रोध करने से होना भी क्या है? ऐसे में दूसरा प्रश्न खड़ा होता है कि आखिर इस कमजोरी का कारण क्या है? क्या व्यवस्था इसका कारण है? यदि व्यवस्था कारण है तब तो उनके लिए भी होना चाहिए जो खुलेआम जातिवाद कर रहे हैं। कारण व्यवस्था नहीं है बल्कि विश्वास की कमी है। हमारे राजनीतिक नेतृत्व में यह डर बना रहता है कि कहीं ऐसा करने से मैं अकेला न पड़ जाऊं। मेरी राजनीति खतरे में न पड़ जाये।

(शेष पृष्ठ 7 पर)

हवलदार मेजर परमवीर पीरुसिंह की जयंती मनाई

परमवीर चक्र आजाद भारत में वीरता के क्षेत्र में दिया जाने वाला सबसे बड़ा पुरस्कार है और इसे भारत रत्न के बाद सबसे बड़ा पुरस्कार माना जाता है। भारत में अब तक 21 लोगों को परमवीर चक्र मिला है और उनमें से राजस्थान के दो हैं और हमारे लिए गौरव का विषय है कि संपूर्ण राजस्थान को गौरव प्रदान करने वाले ये दोनों परमवीर हमारी कौम में पैदा हुए। राजस्थान में पहला परमवीर चक्र झुंझुनूं जिले के बेरी गांव निवासी हवलदार मेजर पीरुसिंह को आजादी के तुरंत बाद पाकिस्तान द्वारा कश्मीर को छीनने के लिए किए गये आक्रमण के विरुद्ध दिखाई अद्भुत वीरता के लिए मिला एवं दूसरा परमवीर चक्र चीनी आक्रमण के विरुद्ध युद्ध में अपनी अद्वितीय वीरता के लिए मेजर शैतान सिंह को मिला। दुर्भाग्य से हवलदार मेजर पीरुसिंह शेखावत के बारे में नई पीढी को बहुत कम जानकारी है और उनकी स्मृति को केवल झुंझुनूं तक सीमित कर दिया गया है। हम सब उनके अद्वितीय शौर्य के बारे में जानें और उनके प्रति अपनी कृतज्ञता प्रकट कर सकें इसके लिए 20 मई को उनकी जयंती के दिन श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउंडेशन द्वारा उनकी जयंती के अवसर फाउंडेशन के अभिभावक माननीय महावीर सिंह जी सरवड़ी के सानिध्य में एक लाईव वर्चुअल कार्यक्रम रखा गया। माननीय महावीर सिंह जी ने कहा कि हमारी कौम ऐसी है जो बिना सिर के लड़ती है लेकिन आज का वातावरण ऐसा बन गया है कि हमको जितना बदनाम किया जा सके, किया जाए ताकि वे अपनी छोटी लकड़ी को बड़ा दिखा सकें। ऐसे लोगों के खिलाफ हमें निरंतर संघर्षशील रहना है, जितना कर सकते हैं उतना करें, सहयोग असहयोग की परवाह किए बिना जितना कर सकते हैं करें क्योंकि हम बिना सिर के लड़ने वाली कौम हैं। हमारा जीवन आराम करने के लिए नहीं है, आज जो वैचारिक युद्ध हो रहे हैं उनमें भी पीरुसिंह जी की तरह अंतिम साधन तक लड़ना है। इसके साथ साथ हम हमारे क्षत्रियत्व को जागृत करने का जो अभ्यास श्री क्षत्रिय युवक संघ करवा रहा है उसमें संलग्न हों। हम जहां भी रहें, जो भी व्यवसाय करें उसमें पीरुसिंह जी की तरह अपने दायित्व के प्रति जागरूक रहें। आज देश का वातावरण कैसा है, हमारे सामने प्रकट हो रहा है, महामारी फैली हुई है और उसका भी मिलकर मुकाबला करने की बजाय एक दूसरे की नीचा दिखाने में लगे हुए हैं। दायित्व बोध कहाँ गया? चीन के आक्रमण के समय पूरा विपक्ष नेहरुजी को कोस रहा था, उस दौर में पूज्य तनसिंह जी ने लोकसभा में कहा कि हम आपस में हमेशा लड़ते रहते हैं और फिर लड़ लेंगे लेकिन आज देश को मिलकर लड़ने की आवश्यकता है इसलिए मैं देश की सरकार को पूर्ण समर्थन देता हूं, हमारे नेताओं में आज इस भाव का सर्वत्र अभाव नजर आ रहा है, अराजकता का वातावरण बना हुआ है। इस माहौल में संघ हमें हमारे उत्तरदायित्व को जागृत रखने का अभ्यास करवा रहा है। हमें हमारे महापुरुषों के इतिहास के लिए पाठ्यक्रम पर ही निर्भर नहीं रहना है बल्कि छोटी छोटी पुस्तकों के माध्यम से इनका जीवन लोगों तक पहुंचाने का भी प्रयास करना है। कार्यक्रम के प्रारंभ में फाउंडेशन के केन्द्रीय सहयोगी यशवर्धन सिंह झेरली ने परमवीर पीरु सिंह जी का जीवन परिचय देते हुए बताया कि उनका जन्म 20 मई 1918 को झुंझुनूं जिले के बेरी गांव में हुआ। वे ठाकुर लालसिंह जी व माता जड़ाव कंवर के चार पुत्रों में सबसे छोटे थे और बचपन से ही खेलकूद आदि शारीरिक गतिविधियों में आगे थे। 20 मई 1936 को 18 वर्ष की उम्र में वे ब्रिटिश आर्मी में भरती हुए। प्रारंभ में पंजाब रेजीमेंट में रहे व वहीं शिक्षा हासिल कर सर्टिफिकेट हासिल किया। वे अच्छे स्पोर्ट्स मैन थे, अनेक प्रतियोगिताओं में भाग लिया व कुछ समय के लिए जापान भी रहे। आजादी के बाद उनकी नियुक्ति राजपूताना राईफल्स की 6ठी बटालियन में हुई। इसी समय कश्मीर पर कब्जे के लिए हुए आक्रमण के मुकाबले के लिए कश्मीर भेजा गया और उनकी बटालियन ने सर्वप्रथम श्रीनगर को सुरक्षित किया। फिर उनकी बटालियन को उरी व टीथवाल

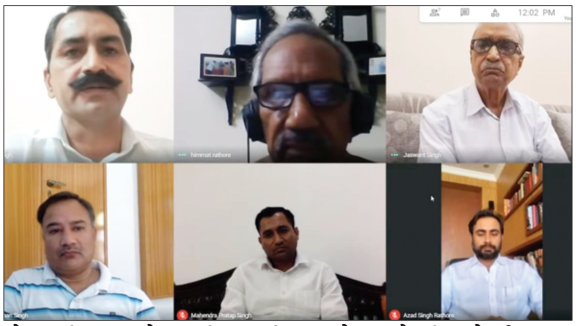

को सुरक्षित करने का जिम्मा मिला। झेलम के किनारे पीरखंडु आदि महत्वपूर्ण मोर्चों पर कब्जा किया। इन सब कार्यवाहियों में उन्होंने अद्भुत वीरता और नेतृत्व क्षमता का परिचय दिया। जुलाई 1948 में जब टीथवाल पर दुश्मन का दबाव बढने लगा तब उनकी बटालियन की डी कंपनी को टीथवाल के दक्षिण में तैनात किया गया जिसके मैजर पीरुसिंह जी थे। इस क्षेत्र का मुख्य क्षेत्र 6 मील की रीचमार गली थी और उस पर लगातार खतरा बढ़ता जा रहा था। दुश्मन ऊंचाई पर था और उनकी मीडियम मशीनगनें तैनात थीं। ऊपर चढना बेहद मुश्किल था, संकरे रास्ते से ऊपर चढना था। चढाई चढ़ने के दौरान उनके तमाम साथी या तो वीरगति को प्राप्त हो गए या बूरी तरह घायल हो गये। चोटी पर अकेले पीरुसिंह जी ही पहुंचे, उन्होंने एम एम जी पर तैनात दुश्मन को मार गिराया। वहां दुश्मन के तीन मोर्चे थे, उनकी गोलियां समाप्त हो गई थीं पर उनके पास हैंड ग्रेनेड से भरा थैला था। उन्होंने हैंड ग्रेनेड से हमला किया, बिना गोलियों के आमने सामने की लड़ाई लड़ी और बंदुक की संगीन से दो शत्रुओं को मार गिराया। सिर से बहता खून आंखों में उतर जाने के बावजूद उन्होंने दूसरे मोर्चे पर हैंडग्रैनेड फैंका और उसे नेस्तनाबूत कर दिया। बूरी तरह घायल होने व गोलियां लगने के बावजूद उन्होंने तीसरे मोर्चे पर ग्रेनेड फैंक कर दुश्मन का गोला बारूद उड़ा दिया। इसी समय मरते मरते दुश्मन ने गोली चलाई जो उनके सिर पर लगी और मोर्चा फतेह करने के साथ ही वे वीरगति को प्राप्त हुए। सी कंपनी के सैनिकों ने इस वारदात का वर्णन प्रस्तुत किया और उन्हें सर्वोच्च वीरता पुरस्कार दिया गया। कार्यक्रम की अगली कड़ी में केन्द्रीय टीम के सदस्य आजादसिंह शिवकर ने परमवीर चक्र मिलने की प्रक्रिया बताते हुए कहा कि यह युद्धकाल में मिलने वाला सर्वोच्च वीरता पुरस्कार है। गृह मंत्रालय और सेना द्वारा इसकी सिफारिश की जाती है और इससे संबंधित समिति इसका निर्णय करती है। इसकी प्रक्रिया युनिट के सी ओ से प्रारंभ होकर अंत में केन्द्रीय समिति तक पूर्ण होती है तब वीरों में वीर परमवीर का चयन होता है। अगली कड़ी में प्रादेशिक सेना में चयनित हुए राजस्थान के प्रथम सिविल अधिकारी महेन्द्रप्रताप सिंह गिराब ने सेना में अवसरों की जानकारी देते बताया कि हमारे युवा सिविल सर्विसेज के लिए तैयारी करते हैं जिनकी 4-4 वर्ष तक वैकेंसी नहीं आती जबकि सेना में अनेक अवसर ऐसे हैं जिनकी प्रति छः माह में विज्ञप्ति जारी होती है और समय पर परीक्षा होती है, नियुक्ति मिलती है। सेना में काम करना हमारी मूल प्रवृत्ति है और ऐसा काम है जिसमें काम करते हुए लगता नहीं है कि हम काम कर रहे हैं। उन्होंने सेना में भर्ती होने के विभिन्न अवसरों की जानकारी दी। 12वीं के बाद व स्नातक के बाद के विभिन्न अवसरों की जानकारी दी। इंजीनियरिंग, बी एड आदि व्यावसायिक डिग्री के बाद मिलने के अवसरों की जानकारी दी। प्रादेशिक सेना के बारे में भी विस्तार से जानकारी दी। इसके बाद संघ के वयोवृद्ध स्वयंसेवक कर्नल हिम्मत सिंह पीह ने अब तक हुए 21 परमवीरों में से राजपूत परमवीरों की जानकारी दी। उन्होंने बताया कि हमारे समाज में प्रथम परमवीर चक्र नायक यदुनाथ सिंह को आजादी के बाद प्रथम युद्ध में ही नोशैरा में दिखाई वीरता के लिए मिला। दूसरा हवलदार मेजर पीरुसिंह को दिया गया। इसके अलावा गोरखा रेजीमेंट के कैप्टन गुरबचन सिंह सलारिया को कांगो में दिखाई अद्वितीय वीरता के लिए मिला। इसके बाद चीन युद्ध में अद्भुत वीरता के लिए मेजर शैतान सिंह को मिला। कारगिल युद्ध में राईफल मैन संजय कुमार को उनकी वीरता के लिए परमवीर चक्र मिला। इन्होंने वीरता दिखाई और जीवित भी रहे जबकि अन्यों को यह मरणोपरांत मिला। इसके अलावा परमवीर मेजर धन सिंह थापा भी नेपाली मूल के राजपूत थे जिनके पूर्वज मेवाड़ से पलायन कर गये थे। थापा दो तरह के होते हैं। जो अपने साथ बहादुर नहीं लगाते वे राजपूत होते हैं। कर्नल साहब ने हमारे समाज के खिलाफ चल रहे भ्रामक प्रचार का भी उल्लेख किया एवं तथ्यों के साथ उनका जबाव देने का भी आह्वान किया गया। कार्यक्रम में सरकार से मांग की गई कि परमवीर पीरुसिंह के शौर्य से नई पीढी को अवगत करवाने के लिए स्कूली पाठ्यक्रम में उनकी जीवनी को शामिल किया जाए एवं राजस्थान की राजधानी जयपुर में उनकी स्मृति को स्थायी बनाने के लिए स्मारक बनाया जाए।

शेयर बाजार, कमोडिटी बाजार, करेन्सी बाजार, क्रिप्टो बाजार के लिए
"टेक्निकल एनालिसिस
बेसिक ओर एडवांस सीखे।"
फ्री कॉल्स और जानकारी के लिए सम्पर्क करें
राजपाल सिंह करीरी - 9828080757

IAS/ RAS
तैयारी करने का राजस्थान का सर्वश्रेष्ठ संस्थान
स्प्रिंग बोर्ड
Spring Board
Springboard Academy, Main Riddi Siddi choraha, Opposite Bank of Baroda, Gopalpura bypass Jaipur
website : www.springboardindia.org

अलख नयन
आई हॉस्पिटल

Super Specialized Eye Care Institute
विश्वस्तरीय सम्पूर्ण नेत्र चिकित्सा सेवाएं
मोतियाबिन्द | कॉर्निया | नेत्र प्रत्यारोपण
कालापानी | रेटिना | बच्चों के नेत्र रोग
डायबिटीक रेटिनोपैथी | ऑक्यूलोप्लास्टि
'अलख हिल्स', प्रताप नगर एक्सटेंशन, एयरपोर्ट रोड, उदयपुर
0294-2490970, 71, 72, 9772204624
e-mail : info@alakhnayanmandir.org, Website : www.alakhnayanmandir.org

(पृष्ठ एक से लगातार) आत्मावलोकन...

वीरमदेव जी, हीरादे और बीका दहिया जैसे पात्र जब हमारे सामने होते हैं तब हम किसका चयन कर पाते हैं? ऐसे प्रश्न हमारे सामने बार-बार खड़े होते हैं। क्या हम अपनी कुल मर्यादा, अपनी संस्कृति को अपने स्वार्थ और अहंकार पर महत्व दे पाते हैं? दुर्भाग्य से ऐसी स्थितियां नहीं है क्योंकि हमारा अंतरावलोकन समाप्त हो गया। श्री क्षत्रिय युवक संघ का पूरा मार्ग आत्मावलोकन का है। पूज्य तन सिंह जी का पूरा निर्देशन इस बात का है कि हम अपने आप को देखना सीख जाएं, श्रेष्ठ का चयन करना सीख जाएं। उन्होंने आगे कहा कि इतिहास का जो श्रेष्ठ तत्व होता है वही संस्कृति का अंग बनता है। दूषित कर्म संस्कृति का अंग नहीं बनते। उदाहरण के लिए बीका दहिया और हीरादे पति पत्नी थे जो कि हमारी संस्कृति में सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण और निकटतम संबंध माना जाता है। लेकिन इनमें से पति हमारी संस्कृति का अंग नहीं बन सका और पत्नी हमारी संस्कृति का अनिवार्य अंग बन गई। कारण केवल एक ही है श्रेष्ठ का चयन। हमें इस गौरवशाली इतिहास को सहेजना भी हैं और इस गौरवशाली इतिहास की परंपरा को अनवरत भी रखना है, उसे खंडित भी नहीं होने देना है। श्री क्षत्रिय युवक संघ यही कर रहा है। कार्यक्रम के प्रारंभ में जालोर के इतिहास के जानकार मधुसूदन व्यास ने वीरमदेव जी का स्मरण करते हुए कहा कि मैं अपने आप को सौभाग्यशाली मानता हूं कि मैं जालौर का रहने वाला हूं। पद्मनाभ ने जालौर को आठवीं मोक्षपुरी कहा है। मेरे लिए यह भी गर्व का विषय है कि मेरे पूर्वज भी उस महान युद्ध से जुड़े हुए रहे थे और आज का दिन, वैशाख सुदी छठ, केवल जालौर के ही नहीं अपितु भारत वर्ष के इतिहास में भी अत्यंत महत्व का दिन है। क्योंकि जिस प्रकार का युद्ध वीरमदेव ने किया और उन्होंने जिस उद्देश्य के लिए अपने प्राणों का बलिदान किया किया वह उद्देश्य बड़ा महत्वपूर्ण है। हमारा दुर्भाग्य यह रहा कि जालौर के इतिहास के संबंध में जितना शोध मारवाड़ की धरा पर होना चाहिए उससे अधिक शोध गुजरात की धरा पर हुआ है। जालोर के ऐतिहासिक युद्ध का वर्णन करते हुए उन्होंने कहा कि अलाउद्दीन खिलजी द्वारा सोमनाथ मंदिर को लूटने के लिए मार्ग देने के प्रस्ताव को वीरमदेव के पिता और जालोर के शासक कान्हड़ देव द्वारा ठुकराया गया तब दूसरे मार्ग से अलाउद्दीन सोमनाथ मंदिर पहुंचा और उसे लूटा। जब वह मंदिर को लूट कर, वहां से धन संपत्ति और मंदिर का शिवलिंग लेकर वापस जा रहा था तब कान्हड़ देव ने उस पर आक्रमण करके सोमनाथ के शिवलिंग को मुक्त कराया और जालोर के पास सराणा गांव में स्थापित किया जो आज भी वहां पर विद्यमान हैं। इस पराजय से अपमानित होकर अलाउद्दीन ने जालौर के किले को जीतने के लिए अनेक वर्षों तक प्रयास किए किंतु दुर्ग की विशिष्ट अवस्थिति और सरंचना के कारण वह सफल नहीं हो सका। तब अलाउद्दीन ने अपनी पुत्री का विवाह प्रस्ताव कान्हड़ देव के पुत्र वीरमदेव के लिए भेजा किंतु वीरमदेव ने अपनी कुल मर्यादा को भंग करने से इंकार करते हुए इस प्रस्ताव को अस्वीकार कर दिया। तब बीका दहिया के विश्वासघात के कारण अलाउद्दीन की सेना को दुर्ग का भेद मिला और 6 दिन तक युद्ध चलता रहा जिसमें 1584 स्थानों पर जौहर हुआ और राजपूत वीरों ने शाका किया। बीका दहिया के विश्वासघात के बारे में जब उसकी पत्नी हीरा दे को पता चला तो उन्होंने मातृभूमि से द्रोह करने वाले अपने पति को अपने हाथों से मौत के घाट उतार दिया। शत्रुओं द्वारा वीरमदेव जी को जीवित पकड़ने के सभी प्रयास असफल हुए और वे अपनी मातृभूमि की रक्षा के लिए वीरगति को प्राप्त हुए। ऐसा कहा जाता है कि उनके कटे हुए शीश को जब दिल्ली ले जाया गया तब उस शीश ने भी शहजादी का मुंह नहीं देखा और पलट गया। तब हिंदू विधि से उस शीश का दाह संस्कार किया गया और शहजादी ने यमुना नदी में कूदकर अपनी जीवन लीला समाप्त कर ली। वीरमदेव जी जैसे वीर और हीरादे जैसे वीरांगना इस जालौर की धरती पर हुए हैं इसलिए हमें जालौर की इस धरती को प्रणाम करना चाहिए और जालौर और सोनगरा चौहान वंश के उज्जवल इतिहास को सभी तक पहुंचाने के लिए प्रयास करना चाहिए। जालौर शहर से विधायक तथा राजस्थान विधानसभा में प्रतिपक्षी दल के मुख्य सचेतक जोगेश्वर गर्ग ने कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा कि जालौर के इतिहास के संबंध में निश्चित रूप से बहुत कम पुस्तकें उपलब्ध हैं और उस पर यथोचित शोध नहीं किया गया है। चित्तौड़ को एक युद्ध में हराने वाले अलाउद्दीन खिलजी को जालौर को हराने के लिए चार प्रयास करने पड़े। दो बार उसके सेनापतियों द्वारा और दो बार स्वयं खिलजी द्वारा। दुर्ग की अभेद्यता को देखकर खिलजी द्वारा अपनी पुत्री का विवाह प्रस्ताव भी वीरमदेव के लिए दिया गया जिसे स्वाभिमानी वीर द्वारा अस्वीकार कर दिया गया। जिस समय अलाउद्दीन खिलजी का पूरे देश पर प्रभाव था, अधिकांश लोगों ने उसकी अधीनता स्वीकार कर ली थी उस समय जालौर के वीरों ने, जालौर की जनता ने उसके सामने शीश नहीं झुकाया। संघर्षपूर्ण युद्ध के बाद अलाउद्दीन खिलजी ने जालौर को जीत तो लिया लेकिन इसके बाद वह स्वयं भी 6 महीने से अधिक जीवित नहीं रह सका। मेरा जालौर के उन व्यक्तियों से, जो इतिहास के अध्ययन संबंधी कार्यों से जुड़े हुए हैं, निवेदन है कि वे जालौर के इतिहास पर शोध करें और कान्हड़ देव जी और वीरमदेव जी के इतिहास को सबके सामने लाया जाए। जालोर के वास्तविक इतिहास को सामने लाने का प्रयास हो और साथ ही उस इतिहास से प्रेरणा लेने का वातावरण भी हम बनाएं। जालोर का दुर्ग अपने आप में अनूठा है, राजस्थान के श्रेष्ठतम और विशाल किलो में इसकी गिनती होती है। 5 किलोमीटर लंबी दुर्ग की प्राचीर हैं जिसके संरक्षण और अध्ययन की आवश्यकता है। इसके लिए पुरातत्व विभाग का सहयोग लेने की भी आवश्यकता है। विधायक के रुप में मैं भी अपना पूरा प्रयास करूंगा कि दुर्ग की ऐतिहासिक इमारतों का संरक्षण हो और वहां तक जाने की सुविधा विकसित की जाय। इतिहास पर शोध, उसके संरक्षण के साथ ही यह भी आवश्यक है कि हम उस से प्रेरणा लेकर उसके मार्गदर्शन में उज्जवल भविष्य का भी निर्माण करें। हम यह विचार करें कि केवल साढ़े तीन दिन के राजा वीर वीरमदेव को आज हम क्यों स्मरण कर रहे हैं उनका स्मरण हमें क्यों प्रेरणा दे रहा है? उनके जीवन से प्रेरणा लेकर हम भी जालौर को गौरवान्वित करने वाले कार्य करें। पूर्व विधायक तथा निवर्तमान कांग्रेस जिलाध्यक्ष डॉक्टर समरजीत सिंह ने कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा कि मैं कोरोना काल की इन विषम परिस्थितियों में वीर वीरमदेव चौहान के बलिदान दिवस पर इस संगोष्ठी के आयोजन के लिए श्री क्षत्रिय युवक संघ के कार्यकताओं का आभार व्यक्त करता हूं। वीरमदेव जी का नाम जब जबान पर आता है, उनके किस्से जब हम सुनते हैं तो हम सभी के रोंगटे खड़े हो जाते हैं। यह सुनकर और पढ़कर कि किस तरह से उन्होंने पराक्रम दिखाया और मातृभूमि के सम्मान के लिए अपना बलिदान दिया हमारे हृदय में भी कुछ कर गुजरने की हूक उठती है। धर्म रक्षा के लिए जिस प्रकार से उन्होंने शहजादी से विवाह के इतने बड़े प्रस्ताव को ठुकरा दिया और अपनी मातृभूमि के लिए लड़ते हुए बलिदान दिया, ऐसा उदाहरण अन्यत्र मिलना दुर्लभ है। युवाओं को आज वीरमदेव जी से चरित्र की और धर्म रक्षा की प्रेरणा लेनी चाहिए। संयम और धीरज जैसे गुणों से ही हम अपने चरित्र की रक्षा कर सकते हैं और व्यक्ति के पास चरित्र है तो सब कुछ है। यदि हम अपने मूल्यों को कायम रखेंगे तो ही अपने देश और संस्कृति को जिंदा रख पाएंगे। मैं युवाओं से कहना चाहूंगा कि अपना इतिहास पढ़िए, हमारा इतिहास ऐसे वीरों की कथाओं से भरा पड़ा है। इतिहास हमें उठ खड़े होने की प्रेरणा देता है। जीवन में उतार-चढ़ाव आते रहते हैं किंतु यदि हम धीरज नहीं खोते हैं तो सभी समस्याओं का सामना कर सकते हैं। वीरमदेव जी के जीवन से इन सभी गुणों की हमें प्रेरणा मिलती है। भाजपा के प्रदेश उपाध्यक्ष तथा रानीवाड़ा विधायक श्री नारायण सिंह देवल ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि वीरमदेव जी जालौर के ऐसे सपूत हैं जो अपनी मातृभूमि, धर्म और संस्कृति की रक्षा करते हुए वीरगति को प्राप्त हुए। वे एक महान योद्धा थे, एक सच्चे राजपूत थे जिन्होंने क्षत्रिय धर्म का पालन किया। 22 वर्ष की अल्पायु में उन्होंने धर्म और संस्कृति के शत्रुओं से संघर्ष करते हुए अपना बलिदान दिया। ऐसे महापुरुष का बलिदान दिवस श्री क्षत्रिय युवक संघ द्वारा मनाया जा रहा है, यह अत्यंत प्रसन्नता का विषय है। समाज और राष्ट्र निर्माण के क्षेत्र में श्री क्षत्रिय युवक संघ का अतुलनीय योगदान रहा है। अपने हीरक जयन्ती वर्ष के अंतर्गत संघ द्वारा ऐसे कार्यक्रम सभी के लिए प्रेरणादायक है। हमारी युवा पीढ़ी के सामने हमारे महापुरुषों के सही इतिहास को लाकर उन्हें प्रेरणा देने का कार्य महत्त्वपूर्ण और आवश्यक भी है। वीर वीरमदेव जी के इतिहास को उचित महत्त्व मिले इसके लिए हम सभी को मिलकर प्रयास करने की आवश्यकता है। कार्यक्रम का संचालन संभागप्रमुख अर्जुन सिंह देलदरी ने किया। **– अभयसिंह रोडला**

(पृष्ठ एक से लगातार) क्षात्र धर्म...

उन्हें कुछ लोगों द्वारा नास्तिक भी कहा गया किन्तु वे तो अस्तित्व में अटूट विश्वास रखने वाले विरले व्यक्तित्व थे। सनातन धर्म की मान्यताओं और सिद्धांतों से भी उनका कभी कोई विरोध नहीं रहा। उन्होंने केवल तत्कालीन व्यवस्था में जो विकृतियां, पाखण्ड और आडंबर फैल गए थे, उनका विरोध किया। अपनी शिक्षाओं के माध्यम से उन्होंने सनातन धर्म के सिद्धांतों को ही नए तरीके से लोगों को समझाया। कर्मकांड में फंसे अध्यात्म को मुक्त करवाकर नए रूप में समाज में पुनः प्रवाहित किया। 80 वर्ष की उम्र तक वे लगातार यह कार्य करते रहे और अंत में महानिर्वाण को प्राप्त हुए। उनका जीवन हम सभी के लिए आज भी आदरणीय और प्रेरणास्त्रोत है। उनकी प्रेरणा से हम हमारे जीवन में भी निखार ला सकें, इसके लिए हम कृतज्ञता पूर्वक उन्हें स्मरण करें। **– अभयसिंह रोडला**

(पृष्ठ एक से लगातार) सरकार व....

पत्र के बाद खुलकर जातिवाद कर रहे राजनेताओं का रवैया रक्षात्मक हुआ एवं पुलिस ने विशेष जांच दल गठित कर प्रकरण का अनुसंधान उसे सौंप दिया है। अपेक्षा की जा सकती है कि निष्पक्ष जांच होगी एवं दोषियों को दंडित किया जाएगा। ऐसा ही एक पत्र भारतीय जनता पार्टी के केन्द्रीय नेतृत्व को भी भेजा गया है। पत्र में लिखा गया है कि प्रतिदिन प्रदेश सरकार को कानून व्यवस्था के नाम पर कोसने वाला प्रतिपक्ष एक जाति विशेष द्वारा राजपूत समाज के खिलाफ होने वाले अपराध पर मौन साध लेता है। प्रदेश में ऐसी अनेक घटनाएं हुई हैं जिनमें एक जाति विशेष के अपराधियों ने राजपूतों के खिलाफ अपराध किया लेकिन वे क्योंकि प्रदेशाध्यक्ष के सजातीय थे इसलिए भाजपा का प्रदेश नेतृत्व ऐसी घटनाओं पर सरकार को कानून व्यवस्था के नाम पर कोसने की अपेक्षा उपेक्षा पूर्ण मौन साध कर अपराधियों के प्रति मौन समर्थन प्रकट करता है। भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष जगत प्रसाद नड्डा को लिखे गए इस पत्र में बताया गया कि राजपूत समाज ने अपने खून पसीने से प्रदेश में आपकी पार्टी को खड़ा किया लेकिन प्रदेश नेतृत्व के इस उपेक्षा पूर्ण व्यवहार से आज समाज में आक्रोश व्याप्त है और यह आक्रोश पार्टी के प्रति समाज के अब तक रहे एकतरफा समर्थन के लिए घातक है। इस पत्र की भी सैंकड़ों प्रतियां प्रदेश के विभिन्न क्षेत्रों से अब तक मेल की जा चुकी हैं और समाचार लिखे जाने तक यह क्रम जारी है। समाज के सभी प्रकार के लोगों ने श्री प्रताप फाउंडेशन के इस कदम को समयोचित कदम बताया एवं अपनी तरफ से मेल कर अपना समर्थन व्यक्त किया।

(पृष्ठ चार का शेष)

आत्मा विहीन... पहले वालों ने अपनी सुविधा के लिए धर्म से ही किनारा कर लिया और बाद वालों ने अपनी सुविधा के धर्म के तत्व से किनारा कर धर्म की अपनी सुविधा के अनुसार परिभाषा ही बदल दी क्योंकि जब व्यवस्था से आत्मा निकल जाती है तो आत्माविहीन व्यवस्था में व्यवस्था की नियामक सत्ता स्वयं पर किसी भी प्रकार का नियंत्रण स्वीकार नहीं करना चाहती और इसके लिए वह नये नये हथकंडे, नये नये नारे, नये नये आदर्श जनता के समक्ष रखकर अपनी उन क्षुद्र आकांक्षाओं की पूर्ति के लिए मिथ्यक आदर्शों का पाखंडपूर्ण वातावरण बनाते हैं और प्रचार के साधनों के बल पर जनता को भ्रमित करते हैं। जनता भी किसी नियंत्रण को स्वीकार नहीं करना चाहती क्योंकि उसके सामने भी तो आदर्श रूप में वे शासक ही होते हैं इसलिए वह भी इसे ही सुविधाजनक मानने लगती है और उन सुविधाओं के नाम पर शोषित होती रहती है। ऐसे ही शोषण के व्यापार का साधन आज की व्यवस्था बन गई है क्योंकि की उसकी आत्मा को दशकों पहले दफनाने का प्रबंध कर दिया गया था। ऐसे में यदि हम अपने दायित्व के प्रति जागरूक हैं तो हमें हमारे पूर्वजों की राह पर चल कर स्वतः स्फूर्त ही धर्म के नियंत्रण को स्वीकार कर उसके अनुरूप स्वयं को तैयार करना चाहिए। ऐसा करने पर ही हम हमारे स्वधर्म को समझ पायेंगे और स्वधर्म को समझ कर ही हम उसका पालन करने में प्रवृत्त हो प्रकृति से परे की शक्ति को स्वयं में अवतरित होने को आमंत्रित कर सकेंगे। श्री क्षत्रिय युवक संघ उसी अवतरण का मार्ग है और वह मार्ग हमारे स्वागत को उत्सुक है। क्या हम हमारे जीवन के लिए उस स्वागत का महत्व समझ पा रहे हैं?

अपना अंतरावलोकन... समाज के प्रति उसमें इस विश्वास का अभाव नजर आता है कि क्या ऐसा करने पर पैदा होने वाली परिस्थिति में समाज उसके साथ खड़ा रहेगा? इसी विश्वास के अभाव में उनका आत्मविश्वास डगमगाता है और वह कुछ करना चाहते हुए भी लाभ हानि की जोड़ बाकी में उलझ कर रह जाते हैं। ऐसे में उनको और हमको बैठकर सोचना चाहिए कि यह विश्वास कैसे जागृत किया जा सकता है। इस विश्वास को जागृत करने में समाज की भागीदारी उन नेताओं से ज्यादा है और इस दिशा में काम किया ही जाना चाहिए। लेकिन इससे भी महत्वपूर्ण प्रश्न इन राजनेताओं के लिए यह है कि आम आदमी हमेशा अपने नेता में अपना रक्षक ढूंढता है। ऐसे में जो नेता अपने ही लोगों की न्यायपूर्ण आवाज नहीं उठा पाता क्या उसके पीछे अन्य लोग लामबद्ध हो पायेंगे। हम प्रायः बात करते हैं कि आम समाज एक जाति विशेष की दादागिरी से पीड़ित है। क्षेत्र विशेष में इनके दबदबे के कारण वे स्वयं को उपेक्षित एवं अरक्षित महसूस करते हैं और इसलिए राजनीति में हमारे लिए बहुत संभावनाएं हैं, वे लोग हमारे साथ आयेंगे और हम राजनीति में विकल्प बन सकेंगे। लेकिन क्या वास्तव में ऐसा हो पा रहा है? कोई भी अरक्षित व्यक्ति अपनी रक्षा के लिए मजबूत सहारा ढूंढता है। वह उसके पीछे लामबद्ध होता है जो उसकी रक्षा कर सके, उसको न्याय दिला सके, उसके लिए लड़ सके लेकिन क्या हमारा राजनीतिक नेतृत्व उसकी इस मांग को पूरा कर सकेगा? ऐसा विश्वास उसमें जमाया जा सकता है? जो लोग स्वयं अपने आपको अरक्षित समझते हैं, जो स्वयं अपने लोगों की न्यायपूर्ण आवाज को भी नहीं उठा पाते, जिनके खुद के परिवार के लोग उनसे सहयोग की अपेक्षा में उनकी ओर निहारते हों और वे बगलें झांकते हों तो क्या ऐसे लोगों के पीछे अन्य समाज के पीड़ित लोग लामबद्ध हो पायेंगे? निश्चित रूप से इस प्रश्न का उत्तर ना में ही आयेगा और ऐसे ना के भरोसे नेता बनना संभव नहीं है। इसलिए हमारे समाज के उन तमाम लोगों से, जो इस व्यवस्था में राजनीतिक नेतृत्व करना चाहते हैं, निवेदन है कि कहां कमी रह रही है, क्यों उनका आत्म विश्वास डगमगाता है, क्यों वे समाज की शक्ति पर विश्वास नहीं कर पा रहे हैं, कैसे वे अपने भीतर बैठी कमजोरी को दूर कर सकते हैं, इस पर खुले मन से चिंतन करना चाहिए, विचार करना चाहिए, समाज के भीतर बैठकर इस समस्या का उपाय ढूंढना चाहिए, समाज का सहयोग लेना चाहिए ताकि राजनीति में वे मजबूत बनकर व्यवस्था में अपनी उपस्थिति को दमदार बना सकें और समाज को भी उससे लाभ मिल सके।

शाखाओं में शेखाजी का पुण्य स्मरण

स्त्री की मर्यादा की रक्षा के लिए अपना सर्वस्व दांव पर लगाने वाले व शेखावतों के पितृपुरुष महाराव शेखाजी की पुण्यतिथि 14 मई को विभिन्न शाखाओं में वर्चुअल माध्यम से मनाई गई। जयपुर संभाग की वर्चुअल शाखा में सायं 6 बजे कार्यक्रम रखा गया जिसमें भवानी सिंह जाखल ने राव शेखाजी के जीवन परिचय पर प्रकाश डालते हुए बताया कि राव शेखाजी का जन्म संवत 1490 में आसोज मास में विजयदशमी को अमरसर (जयपुर) में हुआ। राव शेखाजी के पिताजी का नाम राव मोकलजी था। शेखाजी ने अपने कुशल नेतृत्व का परिचय देते हुए 24 गांव की रियासत को बढ़ाकर 360 गांव का एक राज्य स्थापित किया। शेखाजी ने अपने जीवनकाल में 52 युद्ध लड़े। घाटवा के युद्ध में घायल हो जाने पर जीणमाता की पहाड़ियों के पास रलावता गांव में संवत 1545 में अक्षय तृतीया के दिन शेखाजी ने अंतिम सांस ली। उनके पांच रानियां थी, जिनसे उन्हें 12 पुत्र प्राप्त हुए। सबसे छोटे पुत्र रायमल जी को राजगद्दी मिली। अंत में उन्होंने बताया कि शेखाजी एक कुशल प्रशासक, वीर योद्धा, नारी रक्षक, आदर्श क्षत्रिय थे। यशवर्धन सिंह झेरली ने बताया कि महाराव शेखाजी के जीवन चरित्र से आज के युवा को बहुत कुछ सीखना चाहिये। उनमें लोकतांत्रिक भाव कूट कूट कर भरे हुए थे। महाराव शेखा जी ने स्वयं की योग्यतानुसार धैर्यपूर्वक धीरे धीरे छोटे से साम्राज्य से एक बड़े साम्राज्य का विस्तार किया। इसके लिये उन्होंने सभी का सहयोग लिया। इसी प्रकार आज का युवा भी स्वयं के गुणों से योग्यता को बढ़ाये और समाज में योग्य लोगों के सहयोग से धैर्यपूर्वक वर्तमान युग में उपलब्ध अवसरों में खुद को विकसित करे। लोकतांत्रिक युग में महाराव शेखाजी के समान ही हम स्वयं के स्वाभिमान की रक्षा करते हुए दूसरों के विचारों का सम्मान करें और आपसी सौहार्द का परिचय देवें। कार्यक्रम में मुख्य वक्ता के रूप में महाराव शेखा संस्थान के सचिव सम्पत सिंह धमोरा ने शेखाजी के जीवन परिचय से संक्षिप्त में परिचित करवाया। उन्होंने बताया कि शेखाजी के पिता मोकल जी को संतान प्राप्त नहीं होने पर उन्होंने शाहपुरा के पास त्रिवेणी धाम की धार्मिक यात्रा की, वहां उन्हें वृंदावन जाने का संकेत मिला जहाँ चैतन्य महाप्रभु के शिष्यों ने उन्हें गौसेवा के लिए प्रेरित किया। उनके और पीर बुरहान के आशीर्वाद से आपको राव शेखाजी जैसे महान पुत्र की प्राप्ति हुई। उन्होंने बताया कि राव शेखा जी के 55 साल के जीवन काल को तीन भागों में विभाजित किया जा सकता है, बाल्यावस्था, युवावस्था और प्रौढ़ावस्था। 12 वर्ष की अवस्था में पिता के देहांत के पश्चात 24 गांव की छोटी जागीर के स्वामी बने। सगे-सम्बन्धियों व शेख बुरहान के सहयोग से इन्होंने एक विस्तृत साम्राज्य का निर्माण किया। जिसमें 360 गांव सम्मिलित थे। राव शेखाजी स्त्री सम्मान रक्षक एवं सर्वधर्म समभाव के प्रतीक भी थे। पन्नी पठानों से समझौते के दौरान राज्य में हिंदुओ पर सुअर के शिकार पर और मुसलमानों पर गाय और मोर के शिकार पर पाबंदी थी, इन्ही विशेष गुणों के बल पर सर्वधर्म समभाव का परिचय देते हुए उन्होंने अपने राज्य में साम्प्रदायिक सौहार्द का वातावरण भी बनाया। उन्होंने बताया कि राव शेखा जी ने कैसे नारी सम्मान के लिए अपने पुत्रों सहित प्राणोत्सर्ग करके नारी संरक्षण और सम्मान की मिसाल पेश की। वे जन-जन के सम्मान के रक्षक थे, इसीलिए उनके क्षेत्र को आज भी शेखावाटी के नाम से जाना जाता है। श्री क्षत्रिय युवक संघ ने कोरोना की विपरीत परिस्थितियों में भी इतिहास पुरूष राव शेखाजी को याद किया एवं श्रद्धांजलि अर्पित कर सभी को वीर शिरोमणि के जीवन परिचय करवाने का श्रेष्ठ कार्य किया है। रात्रि 8.45 पर श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउंडेशन द्वारा लगायी जाने वाली शाखा में भी महाराव शेखाजी की पुण्यतिथि के साथ साथ उदयपुर के स्थापना दिवस व अक्षय तृतीया का कार्यक्रम आयोजित किया गया। राजस्थान भर से जुड़ने वाले सहयोगियों ने तीनों विषयों पर अपने विचार साझा किए।

नरेश सिंह को सीनियर एडवोकेट की मानद उपाधि

नरेश सिंह शेखावत, एडवोकेट जनरल, हरियाणा सरकार को माननीय हाई कोर्ट के सभी न्यायधीशों ने सीनियर एडवोकेट का मानद सम्मान दिया है। पंजाब और हरियाणा हाई कोर्ट के इतिहास में पहली बार किसी राजपूत वकील को इस मानद सम्मान का सौभाग्य मिला है। श्री नरेश शेखावत सपुत्र स्व रोहतास सिंह शेखावत गांव जवाहर नगर मलकपुरीया जिला महेन्द्रगढ़ के मूल निवासी है।

स्वस्थ प्रतियोगिता में उतरें युवा

आज का भौतिक युग प्रतियोगिता का युग है, इसमें जो ईमानदारी से संलग्न होता है, सच्चे मन से संलग्न होता है वह जीवन की सभी ईच्छाओं को प्राप्त करता है, परमेश्वर उसके लिए अवसर जुटाता है। इसलिए युवा ईमानदारी से इस प्रतियोगिता में उतरें और आगे बढ़ें। अपने कैरियर के प्रति जागरूक बनें और ऐसी किसी सुरंग की यात्रा प्रारंभ न करें जिसमें आगे जाकर अंधेरा हो और मार्ग अवरुद्ध हो। 27 मई श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउंडेशन के कार्यक्रम 'शख्सियत की कहानी, उन्हीं की जुबानी' के तहत दिल्ली मैट्रो में JGM Operations के पद पर पदस्थापित प्रेम सिंह राठौड़ ने उपरोक्त बात कही। नागौर जिले के रूणीजा गांव निवासी प्रेमसिंह ने छोटे से गांव से निकल कर देश के प्रथम मैट्रो प्रोजेक्ट को स्थापित करने वाली टीम के अहम सदस्य तक की जीवन यात्रा का वर्णन करते हुए कहा कि जब आप तय कर लेते हैं और उसके लिए मनोयोग से जुट जाते हैं तो परिस्थितियां अनुकूल बनती जाती हैं। उन्होंने युवाओं से आग्रह किया कि हम झूठे अहंकार से बाहर निकलें, जो हम आज हैं, जैसे हैं उस वास्तविकता को समझें और तदनुसार पुरुषार्थ करें तो ही वर्तमान प्रतिस्पर्धा में स्थान बना सकेंगे। प्रेम सिंह जी की यह जीवन कहानी श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउंडेशन के युट्यूब चैनल पर सैंकड़ों लोगों ने लाईव देखी एवं उसके बाद भी लोग युट्यूब पर मौजूद इस कार्यक्रम का लाभ ले रहे हैं।

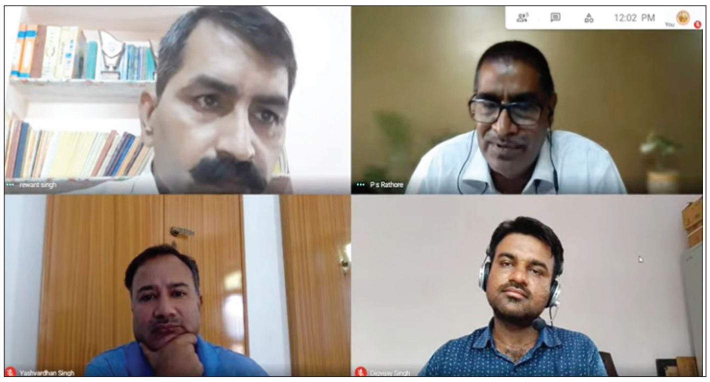

नरपतसिंह निठारा को पितृशोक

संघ के स्वयंसेवक नरपतसिंह निठारा के पिताजी **श्री मानसिंह शेखावत** का 88 वर्ष की उम्र में 13 मई को देहावसान हो गया। पथप्रेरक परिवार परमेश्वर से प्रार्थना करता है कि वे उन्हें अपने श्री चरणों में स्थान देवें।

श्री मानसिंह शेखावत

सायरसिंह चंडालि का देहावसान

संघ के वयोवृद्ध स्वयंसेवक **सायर सिंह चंडालि** का 11 मई को देहावसान हो गया। वे अक्टूबर 1953 में अरड़का (अजमेर) में आयोजित शिविर में संघ के संपर्क में आये। अपने जीवन में 12 शिविर किये। पथप्रेरक परिवार परमेश्वर से प्रार्थना करता है कि वे उन्हें अपने श्री चरणों में स्थान देवें।

सायर सिंह चंडालि

राम-कृष्ण की परम्परा को प्रताप ने आगे बढ़ाया : खारा

महाराणा प्रताप जंयती के उपलक्ष में श्री क्षत्रिय युवक संघ के बाड़मेर संभाग द्वारा प्रताप स्मृति माह आयोजित किया जा रहा है जिसके तहत 9 मई से आगामी 13 जून तक प्रत्येक सोमवार सायं संभागीय शाखा में अलग अलग वक्ताओं द्वारा महाराणा प्रताप के जीवन पर प्रकाश डाला जाता है। इसी क्रम में 17 मई सोमवार को युवा भाजपा नेता एवं राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के कार्यकर्ता स्वरूप सिंह खारा ने वर्चुअल शाखा में महाराणा प्रताप के जीवन चरित्र का वर्णन करते हुए कहा कि जिस प्रकार श्रीराम ने पृथ्वी पर असुरों का संहार कर राम राज्य की स्थापना की। बंदरों, भालुओं आदि वंचित दलितों को एक कर अधर्म के विरूद्ध युद्ध किया। श्रीकृष्ण ने पांडवों को उनका राज्य दिलवाया, द्रौपदी की लाज रखी, कंस का वध कर हजारों अबलाओं का सम्मान बचाया। उसी प्रकार महाराणा प्रताप ने उस समय मुगलिया सल्तनत से न केवल संघर्ष किया, वरन जनता मे स्वाधीनता, स्वंतत्रता, स्वाभिमान, मातृभूमि के प्रति अमर प्रेम की भावना जगाकर वनवासियों, आदिवासियों, भीलों, गरासियों के साथ मिलकर अकबर से संघर्ष किया और अकबर के नापाक इरादों को सफल होने से रोका। स्वाभिमान, धर्म एवं संस्कृति की बात को जन-जन के हृदय में पुर्नस्थापित की। आज कल के कुछ पत्रकार, इतिहासकार हल्दी घाटी में महाराणा प्रताप को पराजित बताकर अकबर को महान बताने का दुस्साहस कर रहे है, जो कि भारतवर्ष, राजस्थान व राजपूत इतिहास को कलंकित करने का प्रयास है। जबकि जिस उद्देश्य से युद्ध किया गया उस दृष्टिकोण में तो अकबर की पराजय हुई। उन्होंने कहा कि श्री क्षत्रिय युवक संघ द्वारा महापुरूषों की जयंती/स्मृति दिवस मनाकर हमारे उज्वल इतिहास से वर्तमान पीढी को रूबरू करने का जो प्रयास किया जा रहा है यह हमारे इतिहास की वास्तविक जानकारी के क्षेत्र में मील का पत्थर साबित होगा। दिवेर का युद्ध, जिसमें अकबर की सेना ने मुंह की खाई, भारतीय इतिहासकारों ने उसे कोई स्थान नही दिया जबकि विदेशी इतिहासकारों ने इस युद्ध को मैराथन युद्ध की संज्ञा दी है। कुछ तथाकथित बुद्धिजीवी जो राजा-महाराजाओं व राजपूतों को अमर्यादित कहते हैं उनकों महाराणा प्रताप व दुगार्दास के जीवन चरित्र को पढना चाहिये। अब्दुल रहीम खानखाना के पूरे परिवार को अमरसिंह के हाथों सुरक्षित उनके शिविर में पहुँचाना, औरंगजेब के पोते-पोतियों को धार्मिक शिक्षा-दीक्षा देकर पूर्ण सम्मान सहित वापस पहुँचाना मर्यादा के अद्वितीय उदाहरण है। ऐसे उदाहरण भारत-भूमि व राजपूत जाति द्वारा ही स्थापित किये जा सकते हैं।

व्याख्यानमाला के इसी क्रम में 24 मई, सोमवार को इस उद्बोधन श्रंखला की अगली कड़ी में एडिशनल कमिश्नर जी एस टी पाली डा. अखेदान चारण ने महाराणा प्रताप को अपनी शब्दांजलि अर्पित करते हुए कहा कि महाराणा प्रताप कोई बड़े साम्राज्य के राजा नहीं थे। भारतवर्ष में ऐसे कई साम्राज्य थे जो महाराणा प्रताप के राज्य से कई गुना बड़े थे परंतु महाराणा प्रताप जैसी प्रेरणा हमें अन्यों से नहीं मिलती है, इसका क्या कारण है? प्रताप ना केवल भारतवर्ष में बल्कि संपूर्ण विश्व में क्रांतिकारियों व योद्धाओं के लिए हमेशा ही प्रेरणा स्रोत रहे इसके कई उदाहरण देखने व सुनने को मिलते हैं। विश्व के कई देशों में उनके जीवन को लेकर शोध चल रहा है परंतु हमारा दुर्भाग्य है कि भारतवर्ष के बच्चों को उनके बारे में न पढ़ाया जा कर अकबर को महान पढ़ाया जाता है जो एक कुटिल, साम्राज्यवादी व रक्त पिपासु शासक था। उन्होंने कहा कि महाराणा प्रताप जैसे महापुरुष हमारे देश की अमूल्य थाती है, जो हमेशा हमें प्रेरणा देती रहेगी। महाराणा प्रताप की प्रारंभिक जीवन

को देखा जाए तो यह स्पष्ट हो जाता है कि वे दुनिया में इतना सम्मान पाने के हकदार क्यों हैं? महाराणा प्रताप उदय सिंह के सबसे बड़े पुत्र थे परंतु उदयसिंह अपने छोटे पुत्र जगमाल को राजा बनाना चाहते थे परंतु प्रताप ने कभी इसका प्रतिकार नहीं किया, जो भी काम उनको पिताजी की ओर से दिया जाता था वह पूरे मनोयोग से करते थे तथा उनके मन में कभी भी राजा बनने की लालसा नहीं रही। वें संत स्वभाव के स्वाभिमानी कुंवर थे। बचपन के दिनों में जब भी तलहटी के महल में रहते थे तो सामान्य लोगों के साथ रहते हुए इतने लोकप्रिय हुए कि सब लोग उनको राणा कीका के नाम से पुकारते थे। जब महाराणा उदय सिंह का देहावसान हुआ तब राजकीय परंपरा के अनुसार राजगद्दी प्राप्त करने वाला पुत्र उनके अंतिम संस्कार में शामिल नहीं होता था परंतु प्रताप उनके अंतिम संस्कार में शामिल हुए क्योंकि वे अपने पिता की इच्छा अनुसार भाई जगमाल को ही राजा बनाना चाहते थे परंतु सामंतो व मेवाड़ की प्रजा के आग्रह पर उन्होंने मेवाड़ की राजगद्दी संभाली। एक सच्चे स्वाभिमानी तथा वीर पुरुष थे उन्होंने कभी भी अपने सिद्धांतों से समझौता नहीं किया उसके लिए चाहे उनको कितने भी कष्ट झेलने पड़े हों। उन्होंने कहा कि महाराणा प्रताप ने हल्दीघाटी का युद्ध इतनी वीरता से लड़ा कि उनके जीवन के अन्य पहलू हमारी जानकारी में आए ही नहीं। हल्दीघाटी के युद्ध में महाराणा प्रताप ने अपने चुनिंदा सैनिकों के साथ मिलकर अकबर की विशाल सेना पर इतना भीषण प्रहार किया की मुगल सेना में हाहाकार मच गया। मुगल इतिहासकार बदायूंनी लिखता है कि हमारी सेना में भगदड़ मच गई तथा सभी सैनिक डर के मारे भागने लगे। इस बीच महाराणा प्रताप ने आगे बढ़कर मान सिंह पर भाले से प्रहार किया जिससे मानसिंह का महावत मारा गया तथा वे होदे में छुप के बचे। इस युद्ध में मुगल सेना की निर्णायक पराजय हुई इस बात के कई प्रमाण मिलते हैं जो यह सिद्ध करते हैं कि मुगल सेना की कितनी दुर्गति हुई थी। मुगल इतिहासकार बदायुंनी लिखता है कि हमारे हजारों सैनिक पेचिश के शिकार हो गए तथा कई सैनिकों ने अपने ही घोड़े को काटकर उसका मांस खाया। मुगल सेना की इतनी दुर्गति किसी अन्य अभियान में नहीं हुई, अंततः वह सेना पीछे हटने पर मजबूर हुई। महाराणा प्रताप एक बहादुर योद्धा होने के साथ-साथ आदर्श योद्धा भी थे। वे कभी भी निहत्थे शत्रु पर प्रहार नहीं करते थे। अपने साथ दो तलवारें रखते थे, इसका कारण यही था कि यदि शत्रु की तलवार टूट भी जाए तो उसे लड़ने के लिए दूसरी तलवार दी जा सके। उनके जीवन आदर्श बहुत ऊंचे थे जो उन्होंने बचपन में अपनी माता जयवंताबाई से सीखे थे। उन्होंने जिंदगी भर उन आदर्शों का पालन किया। एक बार युद्ध में जब कुंवर अमर सिंह ने मुगल सेनापति अब्दुल रहीम खानखाना की बेगमो को बंदी बना लिया तो उन्होंने अमर सिंह को उन्हें सम्मान सहित वापस छोड़ने को कहा तथा इस बात के लिए उन्हें डांटा भी कि हम क्षत्रिय हैं, हमें अपने धर्म पर अडिग रहना है। ऐसे महान पुरुष को हमारी पाठ्य पुस्तकों में सम्मानीय स्थान नहीं देना आने वाली पीढ़ियों को वीरता के आदर्शों से वंचित करना है। कार्यक्रम की शुरूआत संभाग प्रमुख कृष्ण सिंह रानी गांव ने मंगलाचरण से की। इस कार्यक्रम में बाड़मेर संभाग के सैकड़ों स्वयंसेवकों ने भाग लिया।

जयपुर संभाग ने मनाई आल्हा जी जयंती

आल्हा ऊदल बुंदेलखंड के जनमानस में समाये हुए हैं, उनकी वीरता के किस्से उसे गौरवान्वित ही नहीं करते बल्कि आल्हा खंड का गायन उसमें त्वरा भी पैदा करता है। ऐसे ही अलबेले वीर आल्हा की जयंती 25 मई को जयपुर संभाग द्वारा वर्चुअल रूप से मनाई गई जिसमें संघ के उत्तरप्रदेश प्रांत के सहयोगी अरविंद सिंह जी घाटमपुर के सहयोग से धारावाहिक लेखक संतोष पटेरिया, संगीताचार्य जगप्रसाद तिवाड़ी व इतिहासकार नरेंद्र सिंह परिहार जुड़े और अपना उद्बोधन दिया। वक्ताओं ने बताया

कि महोबा के चंदेल वंशीय शासक परमाल के दो सामंत थे आल्हा ऊदल। उन्होंने अनेक युद्ध लड़े और उनमें अद्भुत वीरता का परिचय दिया। आल्हा खंड के लेखन व गायन के बारे में विस्तार से जानकारी दी गई। इतिहासकार नरेंद्र सिंह ने बुंदेलखंड की विरासत की जानकारी देते हुए ऐतिहासिक जानकारियां साझा की। जगप्रसाद जी व नरेंद्र सिंह जी ने आल्हा खंड की पंक्तियां गाकर भी सुनाई। कार्यक्रम के संयोजक अरविंद सिंह जी घाटमपुर ने बताया कि बुंदेलखंड और महोबा के लोग आल्हा के चरित्र से प्रेरणा लेकर लंबे समय से स्वयं को चरित्रवान बनाने का प्रयास करते रहे हैं। वर्तमान समय में श्री क्षत्रिय युवक संघ के शिविरों व अनेक कार्यक्रमों में लगातार भाग लेकर स्वयं को संस्कारित कर रहे हैं। उन्होंने अपना अहोभाव प्रकट करते हुए कहा कि यह मेरा सौभाग्य है कि मेरा संघ के लोगों से संपर्क हुआ एवं मैं हमारे क्षेत्र में इस प्रवृत्ति के प्रारंभ होने का माध्यम बना। आज हमारे यहां लोग संघ के कार्यक्रमों की प्रतिक्षा करते हैं यह सकारात्मक संकेत है और हम इस सकारात्मकता का उपयोग कर अधिकतम लोगों को संघ से जोड़ने का प्रयास करेंगे। कार्यक्रम का संचालन संभाग प्रमुख राजेंद्र सिंह बोबासर द्वारा किया गया।

श्री संघशक्ति प्रकाशन प्रन्यास (मालिक) के लिए मुद्रक व प्रकाशक लक्ष्मणसिंह द्वारा गजेंद्र प्रिन्टर्स, सांगों का रास्ता, किशनपोल बाजार, जयपुर-302003 (दूरभाष 2313462) से मुद्रित एवं ए/8, तारानगर, झोटवाड़ा, जयपुर- 302012 (**दूरभाष: 2466353 व 2466387**) से प्रकाशित। सम्पादक- लक्ष्मणसिंह। Email:- pathprerak1997@gmail.com, Web site:- www.shrikys.org